प्रात स्मरणीय पूज्यपाद न्या ।निधि जनाचार्य १ — श्री मद्विजयानन्द सूरि



१०८ श्री विजयवल्लभ सूरि महाराज—

[आचार्य पदवी सं० १९८१ मगसर सुदि ५ सोमवार १-१२-२४ लाहोर]

⊛ अर्हम् ⊛

लाहौर शहर में प्रतिष्ठा तथा आचार्य पदवी का समारोह !

नमो विश्वप्रधानाय, विश्वविश्रुत कीर्तये ।
सर्वं सम्पद्विधानाय, वर्द्धमानाय वेधसे ॥१॥

प्रारम्भिक निवेदन

पंजाब की विख्यात राजधानी इस लाहौर शहर में जैन धर्म के प्राचीन जीर्णोद्धृत देवमंदिर की प्रतिष्ठा और मुनि श्री १०८ वल्लभ विजयजी महाराज को बड़े समारोह से आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करना यह दो काम इतने महत्व के हुए हैं कि वर्त्तमान जैन इतिहास में इनका स्थान एक विशेष गौरव को लिये हुए होगा. इन दो शुभ कार्यों के निमित्त जैन जनता ने जिस श्लाघनीय उत्साह का परिचय दिया है उसका जिकर तो इतिहास के पृष्ठों में खास तौर पर करने लायक है। यह कहना कुछ अत्युक्ति न होगी कि आज चार सौ वर्ष के बाद इन दो शुभ कार्यों (प्रतिष्ठा तथा आचार्य पदवी) की पुनरावृत्ति करते हुए

पजाब के और खास कर लाहौर के जैन समाज ने जो श्रेय प्राप्त किया है उसकी तुलना यदि असम्भव नहीं तो कठिनतर अवश्य है। धार्मिक और ऐतिहासिक दोनों ही दृष्टि से बडे महत्व के हैं तथा जन साधारण तक इनका पहुचाना भी नितान्त आवश्यक है। इसलिये उक्त कार्यों के सचिप्त विवरण को अपने प्रेमी सज्जनों तक पहुचाने का हम प्रयत्न करते हैं, आशा है पाठक महोदय उससे समुचित लाभ लेकर हमारे इस लघु शुभ प्रयास को सफल करेंगे।

। तीर्थभूताहिमाधवः ।

शास्त्रकारों ने साधु महात्माओं को तीर्थ स्वरूप लिखा है। तीर्थ उसको कहते हैं जिसके आलम्बन से मनुष्य अपनी आत्मा में विकास प्राप्त कर सके अर्थात् जिसके जरीये से आत्मा का उद्धार होसके। तथा तीर्थ के शास्त्रकारों ने स्थावर और जगम ऐसे दो भेद भी किये हैं। स्थावर वे हैं जो सदा एक ही स्थान में स्थिर रहते हैं जैसे शत्रुजय, रेवताचल और सम्मेत शिखरादि। जगम तीर्थ उनको कहते हैं जो चलते फिरते और सदा के लिये कहीं पर स्थिर नहीं रहते, वे जगम तीर्थ साधु मुनिराज हैं। वे जहा कहीं भी जाते हैं वहां पर उनके उपदेश द्वारा अनेक जीवों का उद्धार होता है बहुत से ऐसे जीव हैं जो कि महात्माओं के सदुपदेश से प्रबुद्ध होकर अपनी बिगडी हुई जीवन चर्या को सदा के लिये सुधार लेते हैं। बहुत से लोगों पर इन महापुरुषों के विशुद्ध जीवन का ऐसा प्रभाव पड़ता है कि वे उससे प्रभावित होकर आजन्म प्रभावना युक्त कार्यों में ही सचत लगे रहते हैं। इसलिये शास्त्रकारों ने महात्मा पुरुषों

को तीर्थ की उपमा से अलकृत किया है। एक उदाहरण लीजिये। आज से अनुमान साठ वर्ष पहले पजाब के जैन समाज की वह सुदशा नहीं थी जोकि सौभाग्यवश उसे आज प्राप्त है। उस समय वह अपने असली स्वरूप को बिलकुल ही भूला हुआ था। देव पूजन, देव, गुरु एव धर्म के यथार्थ स्वरूप से वह बिलकुल ही वचित था। परन्तु प्रात स्मरणीय स्वर्गवासी जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्द सूरि उर्फ आत्मारामजी महाराज ने स्वय प्रबुद्ध होकर जब उसे प्रबोधित किया तब वह–जैन समाज–समझा कि इससे प्रथम उसने जिस मार्ग का अवलबन किया हुआ था वह वस्तुत उन्मार्ग था। उसके लिये प्रशस्तमार्ग वही है जिसका निर्देश उक्त महापुरुष कर रहे हैं अत उसने अपने उसी प्राचीन प्रशस्त मार्ग का सतत अनुसरण किया। इसके प्रमाण में पजाब की इस समय विद्यमान सची धार्मिक जागृति प्रस्तुत है। उसमें इस वक्त देव विमानों के सदृश देवमदिर भी विद्यमान है, सचे साधु मुनिराज भी वहां न्यूनाधिक सख्या में मौजूद हैं और सख्या के अनुरूप सद्बोध प्राप्त श्रावक वर्ग भी है। तात्पर्य कि महापुरुषों के उपदेशालम्बन से मनुष्य के आत्मविकास में बड़ी भारी इमदाद मिलती है। तदनुसार उक्त स्वर्गवासी गुरु महाराज के बाद पजाब को यदि किसी ने अपने विशिष्ट उपकार से आभारी किया हो तो वे मुनि महाराज श्री वल्लभविजय जी हैं। अनुमान १२ वर्ष के बाद आप श्री का जब से फिर पजाब में पधारना हुआ तब से पजाब के जैन समाज में कुछ अपूर्व ही जागृति पैदा होरही है, उसने अपनी सामाजिक त्रुटियों को बहुत अश में पूर्ण किया, तथा

विशुद्ध भावना जागृत हुई, परन्तु इसकी पूर्तिका होना अधिकाश महाराज श्री के हाथ में थी तदर्थ सबसे प्रथम श्रीसघ ने आप श्री की सेवा में अपनी अनुभावना को पहुचाया उस समय महाराजजी साहिब जडयाला गुरुमें विराजमान थे और आप का विचार एकदम गुजरांवाला पहुच कर स्वर्गवासी गुरुमहाराज की समाधि के दर्शन करने का था तथा तपस्वी मुनि श्रीगुण-विजयजी महाराज का इरादा भी अपने वार्षिक तपके पारनेका वहीं पर था, मगर क्षेत्र फरसना कुछ ऐसी जबरदस्त निकली कि आपको वहांपर ठहरना पड़ा और तपस्वीजी का पारना भी वहीं पर ही हुआ। तपस्वीजी के पारने की खुशी में यहा के जडयाला गुरुके भाविक सद्गृहस्थोंने उस समय कुछ द्रव्य जमा किया जिसके व्याज में से योग्य जैन विद्यार्थियों को आवश्यकतानुसार मासिक पारितोषक (वजीफा) देना निश्चय हुआ जोकि अभी दिया जारहा है। वहां से विहार करके आप श्री अमृतसर में पधारे। यहा पर आप, श्री आत्मानन्द जैन सैंट्रल लायब्रेरी के साथ वाले श्री आत्मानन्द जैन भवन में ठहरे जो कि श्रीजिन मंदिर के बिलकुल सामने और बहुत ही नजदीक में है। ये दोनों ही धर्मस्थान (लायब्रेरी, भवन) लाला दित्तामल्ल के सुपुत्र लाला-सोहनलाल पूर्नीलालजी दुगड और लाला कस्तूरियामल्ल दीनानाथ बरेल की शुभ कमाई के अमर फल हैं तथा जिस पुण्यात्मा के सतत प्रयास से ये दोनों धर्मस्थान बने और जो आजतक इनकी जी जानसे सार सम्भार कररहे हैं वे पडित हीरालालजी शर्म्मा भी निस्सन्देह धन्यवाद के पात्र हैं।

यहा पर (अमृतसर में) लाहौर के श्रीसघ ने महाराज श्री को

बड़े ही विनीत भाव से लाहौर पधारने की प्रार्थना की और अपना प्रतिष्ठा सम्बन्धी इरादा आपसे स्पष्टतया अर्ज किया परंतु आपने अपना भाव लाहौर होते हुए सीधा गुजरांवाला पहुंचने का बतलाया तदनुसार आप लाहोर में पधारे और ज्येष्ठ शुदि अष्टमी का स्वर्गवासी गुरु महाराज का जयन्ती महोत्सव आपने लाहोर में किया। लाहौर में कुछ दिन विराजने और चतुर्मास के अति निकट होने पर भी पंजाब की जैन जनता को तो यही दृढ़ विश्वास था कि महाराज श्री का यह चतुर्मास निस्सन्देह गुजरांवाला में ही होगा और स्वयं महाराज जी साहिब का विचार भी पूर्णतया स्वर्गवासी गुरुमहाराज के चरणों में ही चतुर्मास करने का था [इसी लिये स्वामीजी आदि कुछ साधुओं ने विहार भी करदिया था जिसके लिये स्वामीजी का चतुर्मास वहीं पर हुआ] परन्तु इस बलवती क्षेत्र फरसना और लाहोर श्रीसंघ के पुण्यातिरेक ने इस कदर जोर मारा कि आप श्री का चतुर्मास लाहौर में ही हुआ। इससे प्रथम आप श्री का लाहोर में चतुर्मास नहीं हुआ। आपके चतुर्मास के दरम्यान, श्री आत्मानन्द जैन महा सभा का अधिवेशन, तथा जलप्रवाह पीड़ित मनुष्यों की इमदाद के लिये पंजाब के हरएक शहर रुपये से द्रव्य एकत्रित होकर भिन्न २ स्थानों में भेजा जाना आदि कइएक उल्लेखनीय कार्य हुए परन्तु लेख वृद्धि के भयसे उन सबका यहां पर जिकर नहीं किया जाता।

[प्रतिष्ठा की त्यारी]

महाराज श्री वल्लभविजय जी का चतुर्मास लाहौर में होना निश्चित हुआ देख लाहौर निवासियों के हर्ष और उत्साह का

पारावार न रहा! उन्होंने तत्काल ही महाराज श्री की सेवा में उपस्थित होकर, प्रतिष्ठा के मुहूर्त का निश्चय करने और तदर्थ विशादी पत्रिका प्रकाशित कराकर वितीर्ण करने की शुभ अनुमति मांगी तदनुसार प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त विक्रम स० १९८१ मार्गशीर्ष शुदि पञ्चमी सोमवार का स्थिर हुआ तदर्थ जो सविस्तर कुकुम पत्रिका प्रकाशित हुई वह परिशिष्ट भाग में दर्ज है। मुहूर्त के निश्चित होजाने पर अब धीरे २ प्रतिष्ठा सम्बन्धी कार्य की त्यारी होने लगी, समय नजदीक आनेपर पजाब के हरएक शहर कसबा और ग्राम में आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई तथा देशान्तरस्थ सद्गृहस्थों को भी आमन्त्रण भेजागया और प्रतिष्ठा सम्बन्धी प्रबध के लिये एक प्रबन्ध कारिणी समिति बनाई गई जिसने कि प्रतिष्ठा सम्बन्धी इस महान कार्य को बड़ी ही योग्यता से निभाया। भक्तनिवास जहां पर महाराजजी साहिब विराजमान थे—के नजदीक राजा ध्यानसिंह की हवेली में एक बड़ा ही विशाल और सौन्दर्य पूर्ण मण्डप बनाया गया, जिस में कि महाराज श्रीवल्लभविजयजी व श्री सोहनविजयजी तथा बाहिर से आनेवाले अन्यान्य विद्वानों के प्रभावशाली व्याख्यान तथा भजन मडलियों के मनोहर भजन हुआ करते थे। इसी शोभनीय विशाल मडप में प्रात स्मरणीय महाराज श्रीवल्लभ विजयजी तथा पन्यास श्रीसोहनविजयजी को समस्त चतुर्विध सघने एकमन होकर क्रमश आचार्य और उपाध्याय पदवी से समलकृत करके अपनी कृतज्ञता का परिचय दिया। इसका खुलासा जिकर आगे होगा। आमन्त्रण के पहुचते ही पजाब के सभी साधर्मी बन्धुओं ने इस शुभ कार्य में हमारी हरएक प्रकार

से सहायता की। अंबाला, होशयारपुर, गुजरांवाला, नारोवाल, मालेरकोटला, लुधियाना और जंडयाला आदि जिन २ शहरों में सोना चांदी के रथ पालकी आसे चामर और चान्दनी आदि बहुमूल्य सामान लेने के लिये यहां से जो आदमी गये उनको वहां २ के श्रीसंघ ने और भी प्रोत्साहित किया तदर्थ हम उनके कृतज्ञ हैं। मार्गशीर्ष शु० द्वितीया शुक्रवार से पंचमी सोमवार तक का प्रोग्राम था। इस अवसर में अपने दिलों में पूर्ण उत्साह को लिये हुए लोग अधिकाधिक संख्या में आने लगे, बाहर से आने वाले बन्धुओं की सुविधा के लिये स्टेशन पर स्वयं सेवक मौजूद रहते थे। पंजाब के अलावा काठियावाड़, गुजरात, मारवाड़ और बंगाल आदि प्रान्तों से भी कई एक सम्भावित सद्गृहस्थ इस अवसर पर पधारे थे। उत्सव में पधारे कुल स्त्री पुरुषों की संख्या अनुमान चार से पांच सहस्र की थी।

व्याख्यान—नवीन मुद्रित प्रोग्राम के अनुसार शुक्रवार की रात को उक्त मंडप में न्यायाचार्य पंडित सुखलाल जी संघवी और पंडित हंसराजजी शा.स्त्री के सामाजिक विषय पर बड़े ही रोचक व्याख्यान हुए और शनिवार को ८ बजे के करीब महाराज श्री वल्लभविजयजी महाराज का एक बड़ा ही सार गर्भित धर्म उपदेश हुआ, तथा दोपहर के दो बजे पंन्यास श्री सोहनविजय जी महाराज ने बड़ी ओजस्विनी भाषा में जैन समाज के सामयिक कर्तव्य को सूचित किया, एवं रात्रि को पंडित हंसराज जी का "वर्तमान समय में जैन समाज को किस मार्ग का अनुसरण करना चाहिये" इस विषय पर एक

छोटा सा, लेकिन भाव पूर्ण भाषण हुआ, अनन्तर भाव पूर्ण कई एक भजनों के बाद सभा विसर्जित हुई।

सवारी—रविवार का दिन बड़ा ही उत्साह पूर्ण था! आज के दिन भगवान् की सवारी बड़ी ही धूमधाम से निकलने वाली थी! सोने चांदी के रथ और पालकियें सुसज्जित होरही थीं महेन्द्र ध्वजा फरका रही थी तात्पर्य यह कि सवारी का सभी सामान त्यारी के पूर्ण योवन में था। प्रात काल महाराज श्री का एक बड़ा ही पुर असर उपदेश हुआ। इसके बाद रथ आदि की बोलियें हुई अनन्तर लोग भोजन के लिये भोजनशाला में चले गये।

ठीक बारह बजे के करीब बड़ी धूमधाम से भगवान् की सवारी निकाली गई और शहर के नियत स्थानों से होती हुई करीबन आठ बजे वापिस लौटी सवारी के साथ जनता की भीड़ बेशुमार थी, जिधर देखो स्त्री पुरषों का समूह ही नजर आता था! जिधर २ से सवारी गुजरती थी उधर के बाजारों तथा उपर नीचे के मकानों में जनता का तांता बधा हुआ दिखाई देता था।

सवारी का क्रम—सब के आगे नफीरियों का मनोहर बाजा था उसके पीछे पुतलियों वाली महेन्द्र ध्वजा फरकाती हुई चल रही थी उसके बाद एक गतका बाजी का कर्त्तव्य दिखाती हुई मडली जारही थी! उसके पीछे मोटरों पर सजी हुई सोना चान्दी की पालकियों और रथों के साथ चलती हुई एक २ भजन मडली अपने मनोहर भजनों द्वारा दर्शक जनता

को मुग्ध कर रही थी। और उनके साथ २ चलने वाले बैंड भी अपनी नवीन वादन कला का खूब ही परिचय देरहे थे। सवारी की लम्बाई तकरीबन आधे माइल के थी। सवारी के दरम्यान में एक सुन्दर मोटर पर बड़ी सजधज के साथ विराजमान की हुई स्वर्गवासी गुरुमहाराज (श्री आत्मारामजी) की आइल पेंटिंग छवी भी दर्शकों के दिलों पर अपूर्व प्रभाव डाल रही थी। सबके पीछे भगवान् का जो गङ्गा जमनी (सोने चान्दी का मिश्रित) रथ था उसके आगे ओसिया की सुप्रसिद्ध भजन मंडली अपना अद्भुत नाटकीय कर्तव्य दिखा रही थी तथा इस रथ के आगे लाहौर का सुप्रसिद्ध जो बैंड बज रहा था उसका मधुर नाद तो अभी तक कानों में गूंज रहा है! अमृतसर, जंडयाला, होशयारपुर, पट्टी, कसूर, रोपड़ और अम्बालादि शहरों की भजन मंडलियों ने अपने उत्तमोत्तम भजनों द्वारा जनता को खूब ही आनन्दित किया। तथा ओसिया की भजन मंडली का अभिनय तो दर्शकों के लिये बिलकुल ही नई चीज थी! इसलिये जैन समाज की उसके साथ इतनी भीड़ थी कि कहीं २ पर तो उसके अभिनय के लिये स्थान बनाने में ही बड़ा हैरान होना पड़ा! इस भजन मंडली के दर्शन हम को बीकानेर निवासी श्रीमान् सेठ सुमेरमलजी सुराणा और उदयचन्दजी रामपुरिया की मेहरबानी से हुए तदर्थ हम उनके आभारी हैं!

प्रतिष्ठा—सोमवार का दिन बड़ा ही सौम्य और मंगल जनक था। उसरोज भगवान श्रीशांतिनाथ को गद्दीपर विराजमान करने और परमपूज्य महाराज श्री वल्लभविजयजी को

आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने का शुभ क्रिया का सम्पादन बड़े ही समारोह से किया गया। लाहौर शहर में ये दो कार्य ऐसे हुए हैं जोकि वर्तमान जैन इतिहास में निस्सन्देह स्वर्णाक्षरों से अंकित करने योग्य है। आवश्यक उपयोगी क्रिया हो चुकने के बाद ठीक नौ बजकर पैंतीस मिनट पर भगवान् को बड़े ही उत्साह और समारोह के साथ गद्दी पर विराजमान किया गया। इससे प्रथम मंडप में इसके लिये जो बोलियें हुई उन सबका उल्लेख परिशिष्ट भाग में कियागया है। यह प्रतिष्ठा जैनाचार्य श्रीमद्विजय वल्लभ सूरि महाराज के पवित्र कर कमलों से सम्पादित हुई। जोकि संघ को उत्तरोत्तर पूर्णतया कल्याणकारी, मंगलकारी और अभ्युदयकारी होगी ऐसा हमारा (श्री संघ का) दृढ़ एवं अटल विश्वास है, यही शासनदेव से हमारी बार २ प्रार्थना है। हमारे इस विश्वास में अणुमात्र भी फर्क न आने पावे।

[आचार्य पदवी प्रदान]

आचार्य पदवी को इससे बढ़कर और सौभाग्य क्या हो सकता है कि वह बहुत समय से जिस अनुरूप वर की प्राप्ति के लिये घोर तपस्या कररही थी वह उसे मिलगया! उसकी—आचार्य पदवी की—दीर्घ कालीन तपश्चर्या ने अपना फल दिखाया तथा समस्त संघ के विनीताग्रह और बड़ों की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए आचार्य पदवी को विभूषित करने में महाराज श्री वल्लभविजयजी ने भी जो उदारता दिखाई है तदर्थ आप

श्री को अनेकानेक साधुवाद ! आपकी आचार्य पदवी का संक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है ।

इनकार—तपोगण गगन दिनमणि श्रीमद्विजयानन्द सूरि आत्मारामजी महाराज के स्वर्गवास होने के बाद पंजाब श्रीसंघ की इच्छा पूज्यपाद महाराज श्री वल्लभविजयजी को ही स्वर्गवासी गुरुमहाराज की इच्छा के अनुसार उनके पट्ट पर विभूषित करने की थी ! परन्तु महाराज श्री ने इस पर अपनी सर्वथा अनिच्छा प्रकट करते हुए कहा कि मेरे सिर पर अभी कई बड़े बैठे हैं जोकि मेरे से कई गुणा अधिक इस पदवी के लिये योग्य हैं अतः श्रीसंघ को उन्हीं महात्माओं में से किसी एक को इस पद पर प्रतिष्ठित करना चाहिये ! इस विचार विमर्श में महाराज श्री कमलविजयजी आचार्य बनाये गये जोकि अभी विद्यमान हैं ! परन्तु बहुत से वर्षों के बाद पंजाब श्रीसंघ अपने दीर्घ अनुभव द्वारा किसी और ही नतीजे पर पहुंचा उस को अपनी आशालता सर्वथा मुर्झाई हुई प्रतीत होने लगी वह समझने लगा कि अब पंजाब की डगमगाती हुई नौका का कर्णधार सिवाय महाराज श्री वल्लभविजय जी के दूसरा नहीं हो सकता । इस विशाल क्षेत्र की अवनति को देखकर सिवाय इनके और किसी के दिल में थोड़ा बहुत भी दर्द होता हो ऐसा समझना भूल है ! अब तो उसको यह पूर्ण विश्वास होगया कि जिस महापुरुष ने पंजाब की इस वीर भूमि में वीर निर्दिष्ट धर्म बीज को वपन करके अंकुरित और पल्लवित किया, उस महापुरुष का अंगुली निर्देश जिस आदर्श गुरुभक्त पर था वही (वल्लभ) वही इस उछरते हुए धर्म पौदे को आलवाल पूर्ण और जलाभिषेचन

द्वारा अभिवर्द्धित करने में पूर्णतया समर्थ निवड़ेगा। इसी उद्देश्य से पंजाब के श्रीसंघ ने अनेक बार महाराज श्री वल्लभविजय जी महाराज की सेवा में, पंजाब के जैनशासन की बागडोर अपने हाथ में लेने की विनीत प्रार्थना की जिसमें सादड़ी (मारवाड़) की अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर जैन कानफ्रन्स के अधिवेशन और महाराज श्री के होशयारपुर के प्रवेशोत्सव पर, पंजाब के समग्र जैन समाज की तर्फ से की गई संमिलित प्रार्थनायें खास तौर पर उल्लेख करने योग्य हैं।

इसी प्रकार कुछ समय बीत जाने पर पंजाब का सोया हुआ भाग जागा! गुरु भक्ति के आदर्श की जीती जागती मूर्ति अपने चरण कमलों द्वारा बम्बई, गुजरात, काठियावाड़, मेवाड़ मारवाड़ और यू० पी० आदि देशों को पवित्र करती हुई अनुमान १३ १४ वर्षों के बाद फिर पंजाब में पधारी! पधारते ही सबसे पहले उसका ध्यान समाज की विशृंखलता पर पहुंचा उससे होने वाली भयंकर हानी पर विचार करते हुए समाज में संगठन पैदा करने की उसे नितान्त आवश्यकता प्रतीत हुई तदर्थ श्री आत्मानन्द जैन महासभा नाम की एक महती संस्था कायम की गई जोकि आजतक कई एक सामाजिक सुधारों में अपनी सफलता का परिचय देचुकी है।

होशयारपुर का प्रवेश—विक्रम सम्वत् १६७८ फाल्गुण शुदि पञ्चमी को महाराज श्री का प्रथम प्रवेश होशयारपुर में हुआ। आप श्री का प्रवेश तो प्रथम अम्बाला में होना था परन्तु स्वर्गवासी लाला गुलाबराय गुज्जरमल की फर्म के

मालिक लाला दौलतराम मुन्निलाल जी आदि श्री सघ होश्यारपुर के विशेष आग्रह और स्थानान्तरीय श्री सघ का उस में अनुमोदन होने से अम्बाला की बजाय आपका प्रथम प्रवेश होश्यारपुर में हुआ। आपके प्रवेश के समय श्री सघ पजाब ने उस वक्त जो जो उत्साह दिखाया वैसा आपकी इस वक्त की आचार्य पदवी से पहले फिर कभी नहीं देखा! उसी उत्साह में विद्यालय के लिये एक लाख के करीब चदा जमा हुआ और तीन लाख के करीब लिखा गया था! उस की व्यवस्था अभी तक जेर तजवीज है। उस समय महाराज श्री की सेवा में समस्त श्री सघ की तर्फ से एक मानपत्र पेश किया गया था और शासन की बागडोर अपने हाथ में लेने की बडे विनीत भाव से प्रार्थना की गई थी। इस से प्रथम सादडी (मारवाड) की जैन कानफ्रन्स के समय भी आप से आचार्य पदवी के लिये अनुरोध किया गया था। परन्तु आपने इस वक्त भी श्री सघ को पूर्ववत् ही निराश किया। अब लाहौर की प्रतिष्ठा के समय फिर श्री सघ ने आप की सेवा में उपस्थित हो कर उसी प्रार्थना को दोहराया तिसपर भी आपको सम्मत होते न देखकर सघ ने, साधु शिरोमणि प्रवर्तक श्री कान्तिविजय जी महाराज, शान्तमूर्ति मुनिप्रवर श्री हंसविजय जी महाराज, आदर्श गुरुभक्त पन्यास श्री सम्पतविजय जी महाराज और परम वृद्ध साधु स्वभाव मुनि श्री सुमतिविजय जी महाराज की पवित्र सेवा में अपनी उक्त शुभेच्छा प्रदर्शित करते हुए उन से प्रार्थना की कि आप इस विषय में श्री सघ पजाब की इमदाद करें!

जिससे कि वह संघ ही अपने शुभ मनोरथ में सफलता प्राप्त करे। श्री संघ पंजाब को इस से बढ़कर और कोई खुशी नहीं हो सकती कि उक्त मुनि महाराजों ने श्री संघ की उक्त प्रार्थना का आशा से बढ़कर स्वागत किया! तदर्थ श्री संघ आपका सदा के लिये कृतज्ञ रहेगा। अब तो संघ के पार्श्वों में और भी बल आगया, स्वामी जी महाराज तो यहां मौजूद ही थे, प्रवर्तक जी महाराज और श्री हंसविजय जी महाराज आदि की तारें पहुंच चुकी थीं इस लिये अब महाराज श्री को इनकार की गुंजायश न रही, संघ के मुखियों ने आप श्री की सेवा में उपस्थित होकर बड़े नम्र शब्दों में आप से कहा कि श्री संघ पंजाब की चिरन्तन आशालता को अब आप श्री अवश्य पल्लवित करें! स्वर्गवासी गुरु महाराज के बाद पंजाब के लिये आप श्री ने जो २ कष्ट सहन किये हैं उन में से हम एक का भी बदला देने के लायक नहीं। आप हमारी विनीतता या अविनीतता पर कुछ भी ध्यान न देते हुए सिर्फ गुरु महाराज के "मेरे बाद तुम्हारी सारसंभाल वल्लभ लेवेगा" इन वचनों का ख्याल करके इस भार को अपने कंधों पर उठाने की कृपा करें! समाज नेताओं के इन वचनों को सुनकर आप कुछ समय तो मौन रहे और अन्त में आपने कहा "परन्तु मेरा बड़ों के साथ व्यवहार तो वैसा ही रहेगा जैसाकि प्रथम था और अभी है।" यह सुनकर संघ की खुशी का पार न रहा! बच्चे २ के दिल में उत्साह और हर्ष उछालियें मारने लगा। बाहर से आये हुए लोगों के ठहरने के स्थानों में घोषणा करा दी गई कि कल प्रात काल ही ६ बजे से पहले सब लोग मंडप में हाजर होजावें

महाराज श्री को 'आचार्य पद' पर प्रतिष्ठित किया जायगा। सच है—

> भागती फिरती थी दुनिया, जब तलब करते थे हम।
> जब से नफरत हमने की, वह बेकरार आने को है॥
>
> (स्वामी रामतीर्थ)

आचार्य पद प्रतिष्ठा—सोमवार को प्रातःकाल ६ बजे से पहले ही स्त्री पुरुषों से सारा पंडाल खचाखच भर गया, मध्य में चांदी का समवसरण स्थापित था जिसमें चारों तर्फ विराजमान प्रभु मूर्तियें दर्शकजनों को भावना वृद्धि द्वारा कृतार्थ कर रही थीं। इस समय मंडप की शोभा कुछ अपूर्व ही थी। जिस समय महाराज श्री वल्लभविजय जी महाराज, वयोवृद्ध स्वामी श्री सुमतिविजय जी महाराज को साथ लिये हुए अपने शिष्य परिवार सहित मंडप में पधारे, उस समय उपस्थित जनता ने "भगवान् महावीर स्वामी, स्वर्गवासी गुरु महाराज और आप श्री की जय" के बलन्द नारों से आपका बड़े ही हर्ष के साथ स्वागत किया, इस समय लोगों के दिलों में जो अपूर्व उत्साह दिखाई देता था उसका वर्णन इस क्षुद्र लेखनी की सामर्थ्य से बाहिर है। हमारा यह विश्वास है कि यदि एक सप्ताह प्रथम आपकी आचार्य पदवी सम्बन्धी विज्ञप्ति प्रकाशित होजाती तो पंजाब का तो एक स्त्री पुरुष भी उस रोज (आचार्य पदवी के रोज) घर में न रहता किन्तु सब के सब लाहौर में पहुंचते। तथा अन्य प्रान्तों से भी एक बड़ी संख्या में लोग उपस्थित होते। हमारे पास आज तक उपालम्भ के पत्र और तारें आ रही हैं मगर लाचार, हमें स्वीकृति ही एन वक्त पर मिली जिसके

लिये सखेद हम उन अनुपस्थित सज्जनों से क्षमा मांगते हैं जोकि इस शुभ अवसर की प्राप्ति से वंचित रहे और इस शुभ अवसर की राह बहुत दिनों से देख रहे थे।

चादर की बोली—सब से प्रथम महाराज श्री पर जो चादर ओढ़ाने की थी उसकी बोली स्वनाम धन्य स्वर्गवासी लाला हीरालाल जी के सुपुत्र लाला माणिकचन्द जी मुनाणी लाहौर वालों ने ११०१ रुपये में ली, और उपाध्याय पदवी के लिये ओढ़ाई जाने वाली चादर की बोली को ७०१ रुपये में स्वनाम धन्य स्वर्गवासी लाला ठाकुरदास जी खानगा डोगरा वाले के सुपुत्र श्रीमान् लाला प्रभदयाल जी दुग्गड लाहौर वालों ने लिया।

मान पत्र प्रदान—चादरों की बोली हो चुकने के बाद समस्त श्री संघकी तर्फ से आप श्री को एक मान पत्र दिया गया जिसको कि उपस्थित चतुर्विध संघ के समक्ष पंडित हंसराज जी ने पढ़कर सुनाया जोकि अन्यत्र परिशिष्ट में दर्ज है। मान पत्र पढ़ चुकने के बाद उपस्थित चतुर्विध संघ को सम्बोधित करते हुए पंडित जी ने कहा कि इस समय संक्षेप से दो बातें आप से मुझे जरूर निवेदन करनी हैं। प्रथम जो चादर इस वक्त श्रीसंघ की तर्फ से महाराज श्री पर ओढ़ाई जाने वाली है वह कपड़े के लिहाज से तो अत्यन्त विशुद्ध एवं पवित्रतम है ही परन्तु इस चादर में एक और विशेषता है इसका सूत मेरे पूज्य पितृकल्प पंडित हीरालाल जी शर्मा ने अपने हाथ से काता है और इस पर सैंकड़ों नहि बल्कि हजारों ही "उपसग्गहर" तथा नव स्मरण के

पाठ हुए हैं ! (हर्ष ध्वनिः) द्वितीय—जिस समय महाराज श्री की दीक्षा राधनपुर में हुई थी उस समय हमारे, जैन समाज के नेता दानवीर सेठ मोतीलाल मूलजी वहा पर मौजूद थे उस वक्त दीक्षा का सब प्रबन्ध आप के हाथ से हुआ था और आज जबकि आप श्री को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है तब भी सेठ साहिब यहा पर आप लोगों के समक्ष विद्यमान हैं, इससे आपकी पुण्य श्री के अतिरेक का अन्दाजा आप लोग बखूबी लगा सकते है । *

महाराज श्री के कीमती वचन—पडित जी के बोल चुकने के बाद महाराज श्री उठे और आप ने फरमाया कि उपस्थित चतुर्विध सघ मुझे जिस गुरुतर पद पर प्रतिष्ठित कर रहा है उसकी जिम्मेदारी को मैं जानता हू । उस पद के अनुरूप मेरे में योग्यता कितनी है इसका भी मुझे पूरा ख्याल है । मैं यह भी अच्छी तरह से जानता हू कि मेरे से वयोवृद्ध, दीक्षावृद्ध और ज्ञानवृद्ध, मेरे देश के मेरे शहर के मेरे परम उपकारी–जिनका उपकार मेरी नस २ में समाया हुआ है–प्रवर्तक श्री कान्तिविजय जी महाराज, महाराज श्री हंसविजय जी महाराज, तथा अनन्य

* बड़े दु ख से कहना पड़ता है कि हमारे समाज के सिर ताज दानवीर सेठ मोतीलाल मूलजी इस वक्त ससार में नहीं ? यहा से जाते ही कुछ दिन बाद बम्बई में उनका देहान्त होगया !!! ऐसे उदार चेता धर्मात्मा पुरुष का जन समाज में से सदा के लिये विछुड़ जाना बड़े ही दु ख की बात है ! पजाब में आपका यह प्रथम आगमन सदा और सबके लिये अतिम होगया ! पजाब भी आप के सदातन वियोग से उतना ही दु खी है जितना कि गुजरात !

गुरु भक्त पन्यास श्री सम्पद्विजय जी महाराज और मेरे पास में विराजमान परमवृद्ध स्वामी श्री सुमति विजयजी महाराज मेरे सिरताज मुनिराज मेरे सिर पर अभी विद्यमान हैं तथापि श्रीसंघ का विशेष आग्रह और उक्त महापुरुषों का अनुरोध एवं विशिष्ट कृपा तथा विशेष कर स्वर्गगामी गुरु महाराज के वचन का पालन इस गुरुत्तर भार के उठाने के लिये मुझे विवश कर रहा है। जिस के लिये मैं लाचार हूं। स्वर्गवासी गुरुमहाराज पंजाब के थे उन्हों ने इस वीर भूमि पंजाब में वीर परमात्मा के निर्दिष्ट किये हुए धर्म बीज को आरोपित, अङ्कुरित और पल्लवित करने में जो २ असह्य कष्ट सहे हैं वे सब मेरे हृदय पट पर पूरे तौर से अंकित हैं।

मैंने इसी उद्देश्य से अपने शिष्य वर्ग में से, सोहनविजय, ललितविजय, उमंगविजय और विद्याविजय इन चार को पन्यास बनाया क्योंकि ये चारों ही पंजाबी हैं और गुरु भक्ति में ये चारों ही एक से एक बढ़ कर हैं। इन चारों ही गुरु भक्तों को मैं अपनी चार भुजा समझता हूं। इन चारों को आज से इस बात को अपने हृदय पट पर लिख लेना चाहिये कि गुजरात देश में जन्म लेने पर भी हमारे गुरु ने स्वर्गवासी गुरुमहाराज के लगाये हुए धर्म वृक्ष को सुरक्षित रखने का बीड़ा उठाया है तो हमारा यह सब से प्रथम कर्तव्य होगा कि हम अपने जीवन में पंजाब को कभी न भूलेंगे। शिष्य का धर्म है कि वह गुरु का सर्वथा अनुगामी हो। इसके सिवाय एक बात और है आप लोग मुझे आचार्य पदवी देरहे हैं मैंने उसे जिन हेतुओं से स्वीकार किया उनका मैं दिग्दर्शन करा चुका हूं यदि यह सब कुछ ठीक है तो मैं आप से कहता हूं कि इस आचार्य पदवी के साथ ही पन्यास सोहनविजय

को उपाध्याय पदवी दी जावे। यद्यपि मेरे शिष्य वर्ग में इस समय उक्त पदवी के योग्य ललितविजय है। वह इससे (सोहनविजय से) दीक्षा में बड़ा और ज्ञान से अधिक है परन्तु पन्यास पदवी प्रथम इसकी हुई है, यदि पन्यास ललितविजय यहां पर मौजूद होता तो निस्सन्देह यह पदवी उसी को दी जाती मगर यह भी इस पदवी के योग्य ही है और पंजाब के ऊपर इसका ममत्व सबसे बढ़कर है इसलिये उक्त पदवी मैं इसी को देनी उचित समझता हूं। मैंने स्वामी जी महाराज तथा यहां पर उपस्थित अन्य साधुओं से भी इस बारे में परामर्श कर लिया है। क्या आप सब को यह बात मनजूर है? आपके इस कथन का समस्त संघ ने एक आवाज से समर्थन किया। इसके अनन्तर पन्यास श्री सोहनविजय जी को मुखातब करके, महाराज श्री ने फरमाया कि तुम को इस वक्त श्री संघ की तर्फ से जिस पद पर प्रतिष्ठित किया जाता है उस की गुरुता का तुम को अब पूरा ख्याल रखना होगा। तुमारे स्वभाव में कुछ उतावला पन है इस उतावले पन की जगह अब तुम को अपने हृदय में गम्भीरता को स्थान देना चाहिये। जो कुछ भी करना समझ सोच कर करना जोकि परिणाम में शुभ फल के देने वाला हो। तथा आज से लेकर अपने को एक बात का खास ख्याल

---

१ नोट—पन्यास श्री सोहनविजय जी महाराज हर एक तरह से योग्य हैं यह पदवी आप की अनुपम शासन सेवा और लासानी गुरु भक्ति का अनुरूप पुरस्कार है, आपके हाथ से पंजाब तथा अन्य देशों में अनेक उल्लेखनीय धर्म कार्य हुए हैं उनका जिकर हम किसी अन्य अवसर में करेंगे। [लेखक]

भजन व्याख्यान और इनाम

सोमवार की रात्रि को पडाल में एक महती सभा हुई, सभापति का आसन दानवीर सेठ मोतीलाल मूलजी ने ग्रहण किया। चौदा २ भजन मडलियों के भजन होने के बाद पडित हसराज जी शास्त्री का सामाजिक विषय पर एक छोटा सा भाषण हुआ। इसके अनन्तर मदिर के पुजारियों तथा अन्य कर्मचारियों को सभापति के हाथ से इनाम दिलाया गया। बाद में ओसिया की भजन मडली ने शिक्षापूर्ण एक अभिनय किया और कुछ अन्य भजनों के बाद सभा विसर्जन हुई।

आचार्य श्री का उपदेश

आज अवसान का दिन है परन्तु खुशी की बात तो यह है कि इस अवसान के दिन भी मगल है! और सेठ साहिब के साधर्मिवात्सल्य ने तो इस मगल को और भी मगलमय बनाया! लोग जाना चाहते थे लेकिन इसी कारण से उन्हें रुकना पड़ा। ठीक आठ बजे के करीब आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरि जी महाराज सभा में पधारे और अनुमान दो घण्टे तक आपने बड़ा ही शिक्षापूर्ण उपदेश दिया। आपने पजाब निवासियों की कन्दमूल भक्षण की तर्फ नहीं हुई अभिरुचि की आलोचना करते हुए केशी स्वामी और गौतमगणधर के प्रसग में, साधुओं को वस्त्र किस प्रकार के और कितने मूल्य के रखने चाहियें यह बतलाकर आधाकर्मी आहार के विषय में बहुत कुछ मनन करने लायक बातें कहीं। इस उपदेश के

दरम्यान में ही प्रसंगवश आपने कहा कि आप लोग सिद्ध क्षेत्र पालीताणा की यात्रा करने के लिये जाते हैं। वहां स्टेशन के नजदीक ही अपनी एक श्री यशोविजय जैन गुरुकुल नाम की संस्था है और जैनबालाश्रम नाम की एक संस्था शहर में है क्या आपने कभी इसको देखा ? यदि न देखा हो तो आज से याद रखो कि जब कभी भी पालीताणे में जाओ तो इन संस्थाओं के दर्शन किये बिना नहीं आना। यहां पर आज चार रोज से श्री यशोविजय जैन गुरुकुल की तर्फ से दो आदमी चन्दे के लिये आये हुए हैं। यदि यह लोग आने से पहले खबर देते तो मैं इनको तुरन्त ही जुबाब लिखा देता। इन लोगों का चन्दे के निमित्त यहां पर आना समुद्र का छपड़ियों से जल मांगने को आने समान है, परन्तु यह लोग यहां पर आकर खाली चले जावें इस में भी शोभा नहीं ? इस लिये ये लोग जिस ग्राम में आवें वहां इनकी यथाशक्ति मदद करनी योग्य है।

इसके सिवाय एक और बात की तर्फ आपका ध्यान खेंचता हूं कि सिद्धक्षेत्र पालीताणा में ऊपर पहाड पर भगवान् ऋषभदेव के चरणों के नजदीक ही अपने परम उपकारी स्वर्गवासी गुरुमहाराज की एक मूर्ति विराजमान है, उस जगह पर जो कुछ भी काम हुआ है वह कितना रमणीय और शोभास्पद है वह तो आप में से जिन लोगों ने वहां जाकर दर्शन किये हैं उनको मालूम ही है। उसकी सुन्दरता के बनाने में जो कुछ भी द्रव्य लगा है उस में पंजाब निवासियों के सिवाय

और किसी का एक पैसा नहीं, यदि चाहते तो गुजरात, काठियावाड़ और मारवाड़ आदि देश का कोई एक ही सद् गृहस्थ इतना काम बनवा सकता था परन्तु पजाब पर जो उनका खास उपकार हुआ है उसकी स्मृति कायम रखने के लिये ही ऐसा नहीं किया गया। मगर अपने घर का काम काज छोड़कर अपने वक्त का भोग देकर केवल गुरुभक्ति के निमित्त अपनी पूरी देखरेख में जिस सज्जन ने इस काम को कराया है उस विनीत गुरुभक्त का धन्यवाद देने में पजाब श्री सघ को अवश्य आगे आना चाहिये वे सज्जन श्री जैन आत्मानन्द सभा भावनगर के मत्री हैं और श्रीयुत वल्लभदास त्रिभुवनदास गान्धी उनका नाम है [इस पर होशयारपुर निवासी लाला गोरामल के सुपुत्र लाला अमरनाथ ने कहा कि श्री आत्मानन्द जैन महा सभा पजाब की तर्फ से उनको एक स्वर्णपदक दिया जावे और उसपर जो खर्च होगा सो मैं अपने पास से दूगा। इसका उपस्थित सभी अन्य सज्जनों ने समर्थन किया]। इसके बाद आपने स्त्रीवर्ग को सम्बोधित करके कहा कि मैं इस वक्त आप से भी दो बातें कहूगा। प्रथम—आप हाथ का जेवर जिसे रत्नचौक या हाथ की मेहदी के नाम से पुकारा जाता है आगे को नया न बनवावें मुनासिब तो यह है कि पहला बना हुआ भी न पहनें। इसके पहनने से एक तो हाथ सर्वथा काम करने से रुक जाता है और दूसरे चोर बदमाश को इसके खोसने में कुछ परिश्रम नहीं उठाना पड़ता, इस लिये ऐसे जेवर का न पहनना ही अच्छा है। द्वितीय—कपड़े पर १० तोले से अधिक गोटा न लगवावें और सलमे सितारे

को तो छोड़ ही देना चाहिए। इन दोनों बातों की निस्बत महा सभा के दफतर से सब शहरों में पत्र आवेंगे जिस किसी माता या बहन को ये बातें पसन्द आवें वह अपना नाम वहां लिख देवें। इसके अलावा और कई एक उपयोगी कामों की तर्फ सभासदों का ध्यान खेंचते हुए उपदेश के साथ ही आपने सभा को विसर्जित किया।

आभार और उपसंहार

लाहौर में होने वाली प्रतिष्ठा और आचार्य पदवी का संक्षिप्त विवर्ण हमने पाठकों की सेवा में उपस्थित कर दिया। इतने बड़े कार्य की सम्पादनता में हमें जो सफलता प्राप्त हुई है वह सब स्वर्गगामी गुरु महाराज की कृपा और यहां पर विराजमान साधु मुनिराजों का अनुग्रह तथा बाहर से आने वाले साधर्मि बन्धुओं की मेहरबानी का नतीजा है। सब से प्रथम हम स्वामि श्री सुमतिविजय जी महाराज को धन्यवाद देते हैं कि जिन्हों ने हमें हर एक प्रकार से प्रोत्साहित किया। तथा श्री देव श्री जी आदि सतियों के भी हम कृतज्ञ हैं कि हमारे इस उत्सव में जडयाला से विहार करके पधारीं। पंजाब के अतिरिक्त बम्बई आदि प्रान्तों से आने वाले धर्मबन्धुओं के हम विशेष आभारी हैं कि जिन्हों ने इतनी दूर से आकर हमारे उत्सव की शोभा को बढ़ाया, विशेष कर लाहौर तथा स्यालकोट के परम्परा वाले स्थानिक वासी भाइयों को तो जितना धन्यवाद दिया जाय उतना कम है, इस मौके पर उन्हों ने हमारी आशा से बढ़कर मदद की है। और साथ में हम अपने यहां के दिगम्बरी

भाइयों की इमदाद के भी बहुत २ मशकूर हैं तथा राजा ध्यान सिंह की हवेली के मैनेजर ठाकुर कधारासिंह जी साहिब और राय साहिब लाला रघुनाथसहाय हैड मास्टर धालसिंह हाई स्कूल तथा राय साहिब लाला दीनानाथ की धर्मपत्नी आदि सद्गृहस्थों का भी हम अत्यन्त आभार मानते हैं कि जिन्हों ने हमको मंडप और रिहायश का मकान देकर हमारे उत्सव को पूर्ण सहायता दी। अन्त शासनदेव से प्रार्थना है कि संघ में सदा शान्ति रहे॥

॥ शुभमस्तु सर्वजगत ॥



[प्रवर्त्तक जी महाराज का पत्र]

साधु शिरोमणि प्रवर्तक श्री १००८ कान्तिविजय जी महाराजने श्री वल्लभविजय जी के ऊपर आचार्य पद प्रतिष्ठा के अनन्तर एक पत्र लिखा था यह पत्र हम को महाराज श्री विजयवल्लभ सूरि जी ने सर्वोपयोगी समझ कर प्रकाशित करने के लिये दिया है प्रवर्तक श्री का पत्र गुजराती भाषा में है उसका हिन्दी भावार्थ इस प्रकार है। [परिशिष्ट छपने के बाद आज्ञा मिलने पर यह पत्र यहां ही प्रकाशित किया जाता है]

आपको जिस धर्म क्षेत्र में श्री १००८ गुरु महाराज की तर्फ से विद्या और विनय शीलता आदि सद्गुणों की प्राप्ति हुई उसी क्षेत्र में श्री सघने आपको गुरु महाराज के पट्ट पर अभिषिक्त किया वह आपके लिये वडे गौरव की बात है। अब आप की और श्री सघ की इसी में शोभा है कि आप गुरु महाराज के कदमों पर चलते हुए शासन की शोभा में उत्तरोत्तर वृद्धि करें। श्री जी महाराज धर्म चर्चा के समय अपने वचनामृत से धर्माभिलाषियों की भावनाओं को पूर्णतया भरपूर करते हुए कहा करते थे कि संसार ताप से अत्यन्त तपे हुए जीवों को वीर परमात्मा की अमृतमयी वाणी सुना कर शान्त करने का सतत प्रयत्न करते रहना यही हमारा सच्चा धर्म धन है। यदुक्तम्—

शास्त्र बोधाय दानाय धन धर्माय जीवितम्।
वपु परोपकाराय धारयन्ति मनीषिणः॥ १॥

वाद विवाद के समय कई एक कम समझ कटुक स्वभाव रखने वाले मनुष्य निष्कपट या सत्य कहने पर भी गर्म हो

और परस्पर की ईर्षा आदि बीभत्स कार्यों के लिये साधु पुरुषों को अपने उच्चार और विचार का कदापि उपयोग नहीं करना चाहिये। इस वास्ते महात्मा पुरुष अलग रहते हुए भी सब से मिले हुए और सब से मिलते हुए भी सब से अलग है। एक उर्दु कवि ने इस भाव को बहुत अच्छी तरह से व्यक्त किया है।

अलग हम सब से रहते है मिसाले तार तम्बूरा।
जरा छेड़ से मिलते है मिलालो जिसका जी चाहे॥

साधु महाराज की मुख मुद्रा को देखते ही उसकी गम्भीरता और शान्तता का प्रभाव यदि श्रोताओं पर पडे तभी वे शान्त भाव से साधु मुनिराज के उपदेशामृत को भली भाति पान कर सकते हैं। कहा भी है—

चन्दनशीतलं लोके चन्दनादपि चन्द्रमा।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये, शीतलः साधुसंगमः॥

इसलिये साधु पुरुषों को सदा शान्त भाव में ही रमण करना चाहिये। परोपकार साधुओं का एक विशिष्ट गुण है। यदि कोई प्रतिपक्षी कष्ट भी दे तब भी साधु पुरुषों को तो दीपक की तरह उसके अज्ञानान्धकार को कष्ट सह कर भी दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

अपने को जलाकर और को रोशन करना।
यह तमाशा हमने फकत चिराग में देखा॥

परोपकार के कार्य में कष्टों के उपस्थित होने पर भाग जाना परोपकारी का काम नहीं। ऐसा कोई समय नहीं था और न होगा जबकि सारा संसार एक ही रंग मे रंगा हुआ नजर आवे। सभी लोग अवगुणान्वेषी और सभी गुणग्राही नहीं होते।

संसार में यदि गुणग्राही लोग हैं तो अवगुण देखने वालों की भी कमी नहीं परन्तु परोपकारी पुरुष इन बातों की कुछ भी परवाह नहीं करते वे कष्टों के पहाड़ों को चीरते हुए अपने ध्येय स्थान पर पहुचकर ही दम लेते हैं, कष्ट सहन किये बिना कुछ नहीं बनता, पुराने उदाहरणों को छोड़िये एक ताजा ही उदाहरण लीजिये—

श्री १००८ गुरु महाराज साहिब ने जितने कष्ट सहे हैं उनकी गणना करनी कठिन है यदि वे इस कदर कष्टों को न सहते और दृढ़ता पूर्वक उनका मुकाबला न करते तो आज जो कुछ धर्म प्रभावना दृष्टि गोचर होरही है यह कभी देखनी नसीब न होती। महाराज श्री अपने पूर्व कष्टों का कभी जिकर करते तो सुनकर आखों में आंसु भर आते इस लिये मात्रमानी हुई बड़ाई काम नहीं आती किन्तु आचार में आया हुआ बड़प्पन ही काम की चीज है। विचार कर देखा जाय तो जितने भी महत्त्व आज तक हुए हैं वे सुख की शय्या पर सोते हुए नहीं किन्तु अनेक विध कष्टों की कटीली शय्या पर तपस्या करने से हुए हैं। महत्त्व प्राप्त करना कुछ मामूली सी बात नहीं।

इसके अलावा नायक बने, इस से यह कदापि समझने का नहीं कि हमारे आश्रय तले रहा हुआ अन्य साधुवर्गमात्र हमारी हाजी के लिये ही है किन्तु छोटे साधु जो हैं वे बड़ों के संयम पालने में और शासन की शोभा वृद्धि में कई प्रकार से मदद-गार हैं ऐसा विचार करने का है। मयूर अपने छोटे बड़े अनेक प्रकार के पिच्छसमूह से ही शोभा देता है। छोटे बड़ों के सहारे अपने संयम का पालन करते हैं और बड़े अपने दीर्घ कालीन

विशिष्ट अनुभव द्वारा समय २ पर उनको समुचित शिक्षण देते हुए उन से संयम पलवाते हैं। इस प्रकार परस्पर के प्रेम भाव से ही शासन शोभा और धर्माभिवृद्धि में प्रगति होती है। महत्त्व की शोभा केवल लघुत्व पर ही अवलम्बित है।

नमन्ति सफला वृक्षा नमन्ति सज्जना जना ।

आप जानते हैं कि यह समय कुसंप के बढ़ाने का नहीं किन्तु जहां तक होसके उसको कम करने का है। परम पूज्य महाराज जब विद्यमान थे तब वे साधुओं और श्रावकों के साथ कितना प्रेम रखते थे, तथा साधुओं, और श्रावकों में परस्पर कितना प्रगाढ़ प्रेम था उसका स्मरण आते ही आजकल की दशा पर अश्रुपात हुए बिना नहीं रहता। वे महा पुरुष एक ही थे परन्तु उनके समय में जो २ काम हुए हैं उनका तो आज, स्मरणमात्र ही रह गया। इसमें सन्देह नहीं कि अधिक महात्मा यदि आपस में मिलकर काम करें तो काम अवश्य अधिक हो मगर ऐसा भाग्य कहां? यदि मुनिनायक और साधारण मुनिराज अपने दिल में कुछ नम्रता को स्थान दें तो शासनोन्नति के अनेक प्रशंसनीय कार्य होसकते हैं परन्तु ऐसा सद्भाग्य मिलना बहुत कठिन है।

आपस में कुसम्प बढ़ने बढ़ाने का मुख्य कारण अभिमान है। इस अभिमान शब्द में से यदि **मा** और **न** निकाल दिया जावे तो तमाम जगत् विजय नाद से गूंज उठे। इस **मा**, और **न** को निकालने का उपा[illegible] दोनों को [illegible] है। ऐसा होने से ही

ही विघातक है इसी लिये इनके त्याग का शास्त्रों में बार २ उपदेश दिया है। जैन शासन में भले ही मुनियों और पदवीधरों की वृद्धि हो यह एक विशेष खुशी की बात है। परन्तु इसके साथ यदि ये अपनी २ शक्ति के अनुसार देश देशान्तर में भ्रमण करके सदुपदेश द्वारा लोगों में वास्तविक धर्म की अभिरुचि पैदा करें और वीतराग देव के समाधि मार्ग के रसिक बनावें तथा एक दूसरे से प्रेम पूर्वक मिलें, प्रेम पूर्वक वार्तालाप करें एवं मिलते ही एक दूसरे के अन्त करण में आनन्द की उर्मियें उठने लगें और हिलमिल कर धर्म सम्बन्धि कार्यों का विचार करें तभी शासन की शोभा तथा उन्नति में यह वृद्धि उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकती है।

गृहस्थ लोग आपस में मिलते समय अपने पुराने से पुराने वैर विरोध को छोड़ कर बड़े प्रेम भाव से मिलते और वार्तालाप करते है। अपने साधु कहलाते हैं और उस पर भी वीतरागदेव के शासन के अनुयायी है। अपने में समता गुण की अधिकता देख कर ही अन्य गृहस्थ लोग धर्म में प्रवृत्त हो सकते हैं इसलिये वीतरागदेव के अनुयायी साधु वर्ग में समता गुण जितना अधिक हो उतना ही अच्छा है इसी में शासन की शोभा है। यदि जिन शासन रसिक मुनि लोगों में समता गुण का अभाव हो तो लोगों की उनके प्रति अवश्य हलकी नजर होगी। लोग उन्हें तुच्छ दृष्टि से देखेंगे, ऐसी दशा में उक्त वृद्धि और साधुता शासन की शोभा के लिये नहीं किन्तु शासन को शरमाने के लिये ही हो सकती है, इसलिये मुनिजनों का समता गुण ही अधिकतया शासन की शोभा है।

आप गुरु महाराज की सेवा भक्ति में निरन्तर लगे रहे, पंजाब में महाराज जी साहिब रूप सूर्यास्त होने के बाद उन क्षेत्रों में आपके हाथ से अनेक प्रभावनाजनक शुभ कार्य हुए तथा निरन्तर भ्रमण करके बहुत कुछ उन्नति की इससे आकर्षित होकर श्री संघने आपको गुरु महाराज के पट्ट पर अभिषिक्त किया यह खुशी की बात है। अब आगे को आपके द्वारा अधिकाधिक धर्म कार्य हों और शासन की शोभा में उत्तरोत्तर वृद्धि हो तथा अन्य मुनिराज भी उसका अनुसरण करें तो उसकी शोभा भी आपको ही है।

विशेष में मैं याद दिलाता हूं कि, १००८ श्री स्वर्गवासी गुरु महाराज श्रीमद्विजयानन्द सूरीश्वरजी तथा गुरु जी महाराज श्री १००८ श्री लक्ष्मीविजय जी महाराज जी की विद्यमानता में प्रायः ऐसा प्रसंग आने ही नहीं पाता था। कदापि दैव योग सकारण या निष्कारण किसी को छद्मस्थपने की लहर-कषाय हो भी जाता तो उसी वक्त नहीं तो उसी दिन के दैवसिक प्रतिक्रमण में सुलह-सप करते करा देते थे। यदि ऐसा होने पर भी कुछ कसर किसी के दिल में रह गई मालूम होती थी तो पाक्षिक प्रतिक्रमण में उसकी सफाई करा दी जाती थी। अंत में सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में तो अवश्यमेव क्षमापना आप स्वयं करते थे और अन्यों से कराते थे। कभी कोई अज्ञानता वश उस बात पर ध्यान नहीं देता था तो उसको श्री कल्प सूत्र का—

"जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा। जो न

उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा। तम्हा अप्पणा चेव उवसमियव्व।"

यह पाठ दिखा कर समझाते थे कि, देखो भाई-बीबा ! श्री तीर्थंकर महाराज ने तथा श्री गणधर देवों ने क्या फरमाया है ? "जो जीव क्षमापना करता है वो आराधक होता है, और जो नहीं करता है वो आराधक नहीं होता है। इसलिये क्षमापना करके आराधक होना योग्य है"। ऐसे प्रेम के वचनों को सुनकर अगला भी शांत होकर क्षमापना कर लेता था। यह आपको भी मालूम ही है, आप सब जानते हैं, आप ने स्वर्गगामी गुरुमहाराज के चरणों में रह कर-गुरुकुल वास से खूब अनुभव संपादन किया है, आप को समझाने की कोई जरूरत नहीं है तथापि अब आप उन महा पुरुषों के स्थानापन्न-उनके पट्ट धर बने है, अत आप को उनका अनुकरण करना योग्य है। श्रीगुरु महाराज आपको सहायता देवें और आप ऐसे कार्य करने लायक होजावें, जिससे कि श्री गुरु महाराज का-श्री १००८ श्री मद्विजयानन्द सूरीश्वर जी महाराज का शुभ नाम जगत् में अधिक से अधिक रोशन होवे। आपके साथ धर्म स्नेह होने से आपको योग्य समझ कर इतनी सूचना शुद्धान्त करण पूर्वक लिखी है। आशा है आप इसमें से सार ग्रहण करेंगे, तथापि मेरे लिखे हुए मतलब में किसी प्रकार भी अप्रीति होने का कारण बन जावे तो उसकी बाबत मिच्छामि दुक्कड देता हुआ मैं अपने लेख को समाप्त करता हूं।

मैं हूं आपका शुभचिंतक—

मुनि—का० वि०

परिशिष्ट

* श्री गौतम गणधराय नमोनम *

श्री लाहौर नगर

श्री प्रतिष्ठा महोत्सव पत्रिका.

वदे श्रीवीरमानन्दम्

नम श्रीशान्तये भेने, य मृग श्रितवत्सलम् ।
सिंहिकासुतविक्रमो—वनेऽपि गगनेऽपिच ॥१॥
य सरम्भमवद्धलिस्पुटित चक्रे न भालस्थलम्,
अभग न मुहुरबन्ध नयने निन्ये न ताम्रद्युतिम् ।
नोचैर्वाचमुवाच वर्म न दधे दध्रे न चास्त्र करे,
त्मामोह नृपमेनमेव नितरान वीर स वस्तायतम् ॥२॥
सच्चारित्रपवित्रचित्रचरित चात्मप्रबोधान्वितम्,
शान्त श्री शमतारमेन सुग्वद सर्वनसेवाधरम् ।
विद्वन्मण्डलमण्डन सुयशसा सन्याप्तभूमण्डलम्,
त सूरिं प्रणमाम्यह सुविजयानन्दाभिध सादरम् ॥३॥

स्वस्तिश्री शान्तिजिन प्रणम्य समस्तानदालये, श्री जिनचैत्यधर्मशालोपाश्रयादि धर्मस्थानविभूषिते, तत्र श्री नगरे शुभस्थाने जिनाज्ञाराधक सम्यक्त्व मूल द्वादश व्रतपालक श्रीसघकी पवित्र सेवामें लाहौर (पजाव) से ली० समस्त श्री सघ की तरफ से जय जिनेश्वर देव की वाचियेगा यहापर श्री देवगुरु धर्मके प्रभाव से आनद मगल वर्तता है आपके यहा भी वर्तता होगा । अपरच

यहापर श्री सुविधिनाथ भगवान् का प्राचीन मंदिर था. उसके जीर्ण हो जानेसे उसको नये सिरसे बनवाने का श्री संघने संकल्प किया, कार्य प्रारंभ हुआ शासन देवकी कृपा और प्रात स्मरणीय स्वर्गवासी आचार्य श्री श्री १००८ श्रीमद् विजयानंद सूरीश्वरजी (श्रीमद् आत्मारामजी) महाराजके पुण्य प्रतापसे अब वह कार्य समाप्त हो गया है प्राचीन मंदिर की जगह अब एक दिव्य और मनोहर जिनालय शोभायमान हो रहा है उसकी प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त श्री वीर संवत् २४५१ आत्म सं २९ विक्रम संवत १९८१ मागसर सुदी ५ सोमवार प्रविष्टे १७ मग्गर ता १ डीसेम्बर १९२४ का निश्चय हुआ है. इस लिये आपसे सविनय प्रार्थना है कि आप इस शुभ अवसर पर अपने परिवार और मित्रमंडल एवं वहा की भजन मंडली सहित पधारकर लाभ उठावें आपके पधारनेसे जैन शासन की उन्नति में वृद्धि होगी. और श्री मुनि महाराजाओं के तथा श्री साध्विओंके दर्शन का भी लाभ होगा. उपराव मंडप(गुलालवाडा) में जगद्विख्यात, बाल ब्रह्मचारी मुनि महाराज श्री श्री १०८ श्रीमद् वल्लभविजयजी महाराज के और पंडित हंसराजजी शास्त्री के व्याख्यान होंगे उनका भी लाभ प्राप्त होगा।

कार्यक्रम

कुंभस्थापनः—मार्गशीर्ष वदी १३ सोमवार मग्गर प्रविष्टे १० ता २४ नवेम्बरका होगा,

रथयात्राः—मार्गशीर्ष शुदि ४ रविवार प्रविष्टे १६, ३० नवेम्बर को होगा

प्रतिष्ठा ——मार्गशीप शुदि ५ सोमवार प्रविष्टे १७ ता. १ दिसम्बर को श्री शांतिनाथ भगवान को गादीपर विराजमान किया जायगा

श्रौर उसी रोज दोपहर के समय अष्टोत्तरी स्नात्र भी होगा तेरस श्रौर पचमी के दरम्यान के दिनोंमें ध्वजपूजन, कलशपूजन, चैत्यप्रतिष्ठा, नवग्रह, दशदिग्पाल, नदावर्त्त श्रौर अष्टमंगलादिक का पूजन होगा

नोट —सज्जनों से विनती की जाती है कि अपना बिस्तरा अपने साथ लावें रुयमेरक स्टेशनपर हाजिर रहेंगे।

ली श्री सघ, लाहौर (पजाब)

"खास आमन्त्रण पत्रिका"

वंदे वीरमानन्दम्

स्वस्ति श्री शुभ नगरे पचपरमेष्ठि पद आराधक एक विंशति गुण विभूषित देव गुरुभक्ति कारक अनेक उपमालायक शेठ श्री योग्य लवपुर (लाहौर) पजाब से श्री सघ का जयजिनेश्वर देव वचियेगा, यहां पर देव गुरु की कृपा से सुख शांति है, आपके सदा चाहते हैं। अपरंच समाचार यह है कि, यहा पर श्री सुविधिनाथ भगवान के प्राचीन जैन मंदिर का जीर्णोद्धार होकर नवीन मंदिर तैयार हुआ है, जिस की प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त्त मार्गशीर्ष शुदि पचमी ५ वार सोम ता० पहली दिसम्बर का है श्रौर गद्दीपर श्री वरकाणा-तीर्थ से आए हुए दिव्य मनोहरमुद्रा युक्त श्रीशांतिनाथ भगवान विराजमान किये जावेंगे।

रथ यात्रा मार्गशीर्ष शुदि चौथ ४ वार रवि ता० ३० नवम्बर को दिन के बारा १२ बजे श्री मंदिरजी से बड़े जलूस के साथ निकलेगी। और मंडप के बीच श्रीमान् मुनिराज श्री वल्लभ विजयजी महाराज का तथा पंडित हंसराज शास्त्री वगैरह सज्जन पुरुषों के व्याख्यान होंगे, इस लिए श्री संघ लाहौर आपकी सेवा में सविनय प्रार्थना करता है कि, आप सेठ साहिब अपने कुटुम्ब तथा मित्र मंडल सहित पधारने की कृपा करें। आप जैसे पुण्यवानों के पधारने से शासन की उन्नति अच्छी होगी, आप श्रीमानों को यह भी मालूम किया जाता है कि यह लाहौर शहर पंजाब देश की राजधानी है, इसी राजधानी में अकबर बादशाह ने मानसिंह और भानुचंद्र जैन महात्माओं को आचार्य वा उपाध्याय पदवियों से विभूषित किया था, और श्री विजयसेन सूरीश्वरजी से प्रथम मुलाकात अकबर बादशाह की इसी नगर में हुई थी।

इस वास्ते आपकी सेवा में निवेदन है कि, जैन ध्वजा के फरकाने के लिये और जैन शासन की उन्नति के निमित्त तथा गुरु महाराज जी के उपदेशामृत पीने के लिए और हमारे उत्साह को बढ़ाने के लिए सैकड़ों सांसारिक कार्य छोड कर भी इस प्रतिष्ठा महोत्सव पर आप साहिबान् को जरूर पधारना चाहिये।

एक बार की विनती को हजार बार की समझीयेगा, श्रीसंघ के नाम कुंकुम पत्रिका डाली गई है उमेद है पहुंच गई होगी और श्रीसंघ को सुना दी होगी।

नोट—रवाना होने से पेशतर तार या पत्र से सूचित करें ताकि आपके स्वागत के लिए स्टेशन पर स्वयंसेवक पहुंच जावें।

आपके पधारने से आपको मुनि महाराज श्री १०८ श्रीवल्लभ विजयजी महाराज, पन्यासजी महाराज श्री सोहन विजयजी, तपस्वीजी श्री गुण विजयजी, समुद्र विजयजी और सागर विजय जी के दर्शनों का लाभ होगा ॥

सम्भव है मुनिमहाराज श्री सुमति विजयजी, पन्यासजी विद्या विजयजी, श्री विचार विजय जी और उपेंद्र विजयजी जिनका चौमासा गुजरांवाला था वो भी प्रतिष्ठा के समय आ पहुंचेंगे साध्वीजी देव श्री जी आदि साध्वियों का पधारना भी हो जायेगा। इनके दर्शन का भी लाभ होगा मतलब चतुर्विध संघके दर्शन का लाभ प्राप्त होगा इसलिये अवश्य पधारने की कृपा कीजियेगा ॥

आपके शुभचिंतक —

बाबू मोतीलाल जौहरी, ला० फग्गुशाह, ला० मानकचंद,
ला० प्रभदयाल, ला० गणपतराय.

नमः सत्योपदेशाय सर्वभूतहितैषिणे ।
वीतदोषाय वीराय विजयानन्दसूरये ॥

पूज्यपाद श्रीवल्लभविजयजी महाराज की पवित्र सेवा में

श्रीमन्त !

हम समग्र पञ्जाब के जुदे २ शहरों, कस्बों, और ग्रामों के निवासी जैनश्वेताम्बर मूर्तिपूजक लोग आज इस पञ्जाब की राजधानी लाहौर शहर में एकत्र होकर समग्र पञ्जाब के जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ की हैसियत से आपश्रीको, स्वर्गगामि

जैनाचार्य न्यायाम्भोनिधि श्रीमद्विजयानन्द सूरि उर्फ आत्मा राम जी महाराज के पट्टपर आचार्यपद से विजयवल्लभ सूरि इस नाम के साथ प्रतिष्ठित करते हैं।

योग्यता

आपकी आयु इसवक्त ५४ सालकी है दीक्षा लिये आपको आज ३७ वर्ष हुए आप बाल ब्रह्मचारी हैं आपका चरित्र निःसन्देह निरवद्य और पवित्रतम रहा है, ज्ञान की दृष्टिसे भी आपका स्थान बहुत ऊंचा है। स्वर्गवासी गुरु महाराज के पास से विद्या और अनुभव प्राप्त करने का आपको अच्छा अवसर मिला, आपने भक्तिपूर्वक गुरुचरणों में रहकर उस अवसर से लाभ भी पूरा उठाया आपकी विनीतता, बुद्धिमत्ता और समय सूचक चातुरी से आकर्षित होकर गुरु महाराजने भी अपने सद्गुणों का मुख्य भाजन आपही को बनाया।

सेवा

विक्रम सम्वत् १९५२ में महाराज जी साहिब का जब स्वर्गवास हुआ तबसे पञ्जाब को सम्हालने का सारा भार आपके ऊपर आया, आपने हम पञ्जाब निवासियों के धार्मिकस्वत्वों का संरक्षण करते हुए समस्त जैन समाज की भी अमूल्य सेवा करने में कुछ बाकी नहीं रखा, यद्यपि आपकी जन्मभूमि गुजरात देश है तथापि आपका अधिकतर जीवन पञ्जाब में ही बीता, आप जब गुजरात में गये तो वहां समय देख कर सामयिक शिक्षाकी ओर सबका ध्यान खींचा जहां पर भी आप गये वहांपर विद्याभिवृद्धि और धार्मिक शक्ति

बढ़ाने की दृष्टि से ही आपने प्रयत्न किया उसके फल स्वरूप श्री महावीर जैन विद्यालय आज बम्बई में मौजूद है। जहाँ रहकर हरसाल अनेक विद्यार्थी विद्याकी भिन्न २ शाखाओं में उत्तीर्ण होते हुए धार्मिक शिक्षा भी प्राप्त करते है। यह कहना कोई अत्युक्ति नहीं कि उक्त विद्यालय जैसी दूसरी सस्था जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज में कहीं भी नहीं एव पालनपुर का एक बोर्डिंग भी आपके शुभ प्रयत्न की साची देरहा है, फिर मारवाड जैसे निकट प्रदेश में भी आपने विद्या के लिये अथक परिश्रम किया।

आप काठियावाड़ आदिमें १२ वर्ष तक भ्रमण करके हमारे सौभाग्य से फिर पजाब में पधारे। आप जब से इधर पधारे हैं तबसे हम लोगोंकी धार्मिक और समाजिक उन्नति के लिये निरतर प्रयास कर रहे हैं तदर्थ हम आप के कृतज्ञ एव ऋणी हैं।

सम्मति

यद्यपि अमली तौर से आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने का सौभाग्य हम को आज ही प्राप्त होता है परन्तु हमारे हृदय पद पर तो आप उसी दिन से आचार्य रूप से विराजित हैं जिस दिन कि स्वर्गवासी गुरुमहाराजने पञ्जाब श्रीसघ के मुखियों से यह कहा था कि पजाब का भार हमारे बाद में वल्लभ उठायेगा उन मुखियों में से स्वनाम धन्य लाला गगारामजी जैसे आज भी कईएक वृद्ध पुरुष यहा पर मौजूद हैं जो गुरुमहाराज की सम्मति को प्रत्यक्ष रूप से कार्य में परिणत होते देख अपने को कृत कृत्य मान रहे हैं।

अनिच्छा और उदारता

गुरु महाराज के स्वर्गगमन के बाद पंजाब के श्रीसंघ ने आपको ही उनके पद पर प्रतिष्ठित करने का निश्चय किया लेकिन आपने इस पर अपनी सर्वथा अनिच्छा प्रकट करते हुए यह उदारता भी दिखाई कि मुझ से जो बड़े इस वक्त मौजूद हैं उनमें से ही किसी को इस पद पर नियुक्त किया जावे, तदनुसार श्री कमलविजयजी महाराज आचार्य बनाये गये जोकि अभी विद्यमान हैं। यद्यपि आचार्य श्री कमलविजय सूरि जी गुण और चारित्र की दृष्टि से सारे जैन समाज में सम्मानित हैं तथापि वार्द्धिक्य के कारण विहार की अशक्ति, गुजरात और पंजाब का बृहदन्तर इन दो कारणों से पंजाब का खास बोझ उठाने में सर्वथा असमर्थ हैं।

प्रसंग और स्थान

आपका वय पर्याय, दीक्षापर्याय और ज्ञानपर्याय ये तीन तो यथेष्ट हैं ही लेकिन आपकी धर्म निष्ठा और समाज सेवा भी किसी अंश में कम नहीं इसीलिये इस शुभ अवसर पर आपश्री को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने का हमने सम्मिलित रूप से निश्चय किया है क्योंकि इस पूर्ण उत्तरदायित्व पद के योग्य इस समय हम आप ही को पाते हैं।

आज तकरीबन् ४०० वर्ष के बाद इस लाहौर शहर में फिर मंदिर प्रतिष्ठा का सुअवसर प्राप्त होता है तथा इसी शहर में श्रीजिन सिंह और भानुचन्द्र क्रमश आचार्य और उपाध्याय पदवी से विभूषित हुए थे। ऐसे ऐतिहासिक स्थान में आज हम सब लोग

उन्हीं दो कामों [प्रतिष्ठा और आचार्यपद] की पुनरावृत्ति करने का सौभाग्य हासिल कररहे हैं यह कुछ कम हर्ष की बात नहीं।

आज यहां पर केवल पंजाब का श्रीसंघ ही उपस्थित नहीं बल्कि काठियावाड़ गुजरात और मारवाड़ के प्रभावित बड़े २ गृहस्थ भी उपस्थित हैं। जिनमें दानवीर सेठ मोतीलाल मूलजी बम्बई-राधनपुर-सेठ गोविन्दजी खरायल-काठियावाड़ धर्मप्रिय सेठ सुमेरमल जी सुराणा [बीकानेर] और सेठ पूजालाल सात भाई वगैरह (अहमदाबाद) आदि सद्गृहस्थों के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

हम को यह कहते हुए और भी आनन्द होता है कि हमारे इस शुभ इरादे-आचार्यपद देने-को मुनि श्रीसुमतिविजयजी, साधु शिरोमणि प्रवर्तक श्री कांतिविजय जी और शान्तमूर्ति मुनिप्रवर श्री हंस विजयजी महाराज ने भी अपनी समुचित अनुमति द्वारा अपनाकर परिपुष्ट किया है। अतः हमारी आपके चरणों में बड़े विनीत भाव से प्रार्थना है कि आप इस आचार्य पदको सुशोभित करें।

आपके हाथों से देशकालोचित प्रभावना जनक अनेक कार्य हों और शासन की विजय पताका उत्तरोत्तर अधिक फहराने यही हमारी शासनदेव से बार २ प्रार्थना है।

विनीत—

पंचनदीय, जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक

समस्त श्रीसंघ

वीर सं० २४५१ आत्म सं० २९

विक्रम सं० १९८१ मार्गशीर्ष शु० ५ चन्द्रवार

स्थान—लाहौर.

Copy of telegrams received at Lahore before Acharyapadaship to Muni Maharaj Shri VALLABH VIJAY Ji

1 To

Motilal Mulji Jain House
Bazaz Hatta, Lahore

Give acharya padvi to Valabhvijayji anyhow tomorrow reply wire

Dahyabhai Kapurchand
Javeri, Bombay

2 Copy of above to Govindji Khushal

3 Copy to Navinchandra Hemchand

4 Copy to Kali Dass Sevachand

5 To Motilal Mulji Jain House,
Bazaz Hatta, Lahore city

You are leader in Sangha Vallabhvijay has much respect for you, you have conscientiously worked for him upto now therefore give acharya padvi to Vallabh vijay tomorrow first December in your presence Dont Miss

Kantivijayji and Hansvijayji have full consent time is scarce therefore Devkaranbhai and other leaders cant reach you are leading chief of Bombay wire having finished the work

Wilful Lalitvijayadi,
Munimandal, Bombay

6. To Jain Swetamber Sangh, Lahore

We recommend to give Maharaj Sree Vallabh vijayji acharya padvi certain on Magsar Sudi panchmi

Jain Atmanad Sabha,
Bhavnagar

7 To Sohanvijay ji, Jain House,
Bazaz Hatta, Lahore

Never miss to recognise Vallabhvijayji as acharya before Sangh to be met on Partishtha reconcile Sumti vijayji any how

Kantivijayji, *Jamnagar*

8 To President Lala Motilal,
C/o Bhagat Nivas Mitha Bazar
Jain Atmanand Sabha, Lahore

Recd you might have read wire of Sohanvijayji we are willing for acharya padvi to Vallabhvijay

Parvartak Shree Kantivijayji, *Jamnagar*

9 To Moti Lal, President,
Atmaram Jain Sabha,
Bhagat Nivas, Saidmitha Street, Lahore

Received wire parvartakji is informed by wire he must have replied our wish same as parvartakji and Punjab Sangh I glad this matter

Hansvijayji, *Ahmedabad*

10 To Valabhvijayji, Jain House,
Bazaz Hatta, Lahore

We all Munimandal request you to accept acharya padvi tomorrow if not we will be displeased

Ghat Koper Munimandal, *Bombay*

11 To Sumtivijayji, Bazaz Hatta,
Jain House, Lahore

We all Munimandal request you to give acharya Padvi to Valabhvijayji you being head you must do this any how

Munimandal, Ghat Koper,
Bombay

12 To Sohanvijayji, Jain House,
BAZAZ HATTA *Lahore*

Give acharya padvi to Valabhvijayji tomorrow any how if not I will not keep Sabandh

Lalitvijay, BOMBAY

Copy of telegrams received by Shrimad Acharya Sri Vallabh Vijay Ji at Lahore

On their being appointed as acharya on 1st December, 1924

1 Hearty congratulations upon getting the honour of an acharva Maganlal Pitamber Dalsukh Gulabchand Sakarchand Nagji Nemchand pitamber Malukchand Shivlal Chhaganlal etc

Dalsukh Chhagan,
Khemchand, *Miyagam*

2 Extremely pleased at your getting Padvi of acharya trusting shall work more for good of world than at present may God Sasan Bless you with more glory and life

Chhotalal Motichand, BOMBAY

3 All members highly glad reading news of acharya padvi for Vallabhvijayji and upadhya for Sohanvijayji hearty congratulations

Atmanand Sabha, BHAVNAGAR

4 Heartily Congratulation Jain Sangh Lahore upon conferring acharyapad on Maharajsaheb

Manager Jain Vanita Vishram,
Surat

5 My hearty congratulations on your appointment as an acharya distinction befitting your dignity

Hazarimal, Johari, Delhiwala,
Rampur

6 Extremely pleased for acharyaship bestowed upon your lordship

Shree Hansvijayji,
Jain Free Library, BARODA

7 Baroda Jain Sabha heartily congratulate maha raj shri Vallabhvijay being acharya and maharaj shri Sohanvijayji being upadhayaya

Amthalal Nanabhai Gandhi,
BARODA

8 Hearty Congratulation hearing acharyapad given to Vallabhvijayji Maharaj

Palanpur Jain Sang,
Palanpur City

9 We agree with you for appinting Vallabhvijayji maharaj as acharya wishing bright uccess

Acharya Ajitsagarji & Mahandrasagar,
Ahmedabad

10 Right glad Punjab brothers installed acharya ship pray accept humble Vandna joy no bounds praying starting for Gujrat

Bhojilal Tarachand, AHMEDABAD

11 Congratulation we are glad hearing Vallabh vijayjee maharaj appointed as acharya thanking for your devotion to Gurudev carry our Vandna

Mulchand Ashram Vanaty, *Ahmedabad*

12 Hearty salutation for your acharya Padvi

Prabhudas Ramchand Photographers, *Ahmedabad*

13 Hearty congratulations on acharyapad bestowed

Mansukhlal Hony Secretary,
Devkaran Mulji Sauratra Vesasrimali Boarding
Junagad

14 Exceedingly glad for degree of acharya conferred on you and wish ever lasting success

Atmanand Jain Library JUNAGAD

15 Kindly accept our hearty congratulations and ananda for degree of acharya conferred on you

Jain Singh, JUNAGAD

16 You accepted acharya padvi so we are hearty pleasure

Ghatkopar Jain Sangh, BOMBAY

17 All heartly glad for acharya Padvi to Vallabh vijayji hearty congratulation

Dosabhai Abhechand,
Jain Sangh, BHAVNAGAR

18 Extremely glad at your Holiness elevation to acharyapada

Sarabhai Bhogilal, Bombay

19 The Bombay fort Swetambar Sangh extremely rejoices on your being given acharyapadship there by the Sangh which you well deserved since a long time now sangh fervently hopes and prays you will be long spared to grace the Jain religion and promote the well being of the Jains and Sadhoomandal in general also

Bhikabhai Ram Chand, President,
Bombay

20 Expressing great rejoicings for Dignity of acharyapad delivered letter Panyasji Personally

Manilal Surajmal, Bombay

21 Greatly rejoiced you being given acharya padvi

Vithaldas, Bombay

22 We are extremely rejoiced on your being given acharyapadship there by the Sangh you well deserved it Since long time we now earnestly hope and wish you will be long spared to grace the Jain religion and promote the well being of the Jain Community and Sadhumandal in general also

Sawchad Katchrabhoy, Bombay

23 Accept Vandna extremely glad for Soorship
Hiralal Bakardas, Bombay

24 Submitting great rejoicings for dignity of acharyapad

Chunilal Ujamchand,
Palanpur wala, BOMBAY

25 We are extremely rejoiced on your being given acharyapadship there by the Sangh you well deserved it Since long time we now earnestly hope and wish you will be long spared to grace the Jain religion and premote the well being of the Jain Community and Sadhumandal in General also

Chhotalal Premji, BOMBAY

26 Hearty Congratulations for acharya padvi

Deokaran Mulji, Bombay

27 Hearty Congratulations for Sooripad real worth appreciated live long for Jainism

Motichand Kapoor Bombay

28 Please accept 1008 wandanas highly pleased

Mohanlal Hemchand Bombay

29 Felicitations for high edification real worth appreciated

Chunilal Virchand, Bombay

30 We have heard with great pleasure your installation to acharyapad you are rightful successor to Shri Atmaramji Maharaj sincerely wish you long life and may you make oonnati of Jain m earnestly wish your early Darshan

Hirachand Motichand Dalichand, Jevari
Sasodar wala, Bombay

FROM

BOMBAY *30 November, 1924*

To

SHREE SANGHA GUJRANWALA,

LAHORE CITY

Give Acharya Padvi tomorrow first December to maharaj shree Vallabhvijayji do this without fail and inform by wire

Lalitvijayadi, Munimandal

2	Copy	to	sirisang	Ramnagar
3	„	„	„	Ambala
4	„	„	„	Patti
5	„	„	„	Ludhiana
6	„	„	„	Ropar
7	„	„	„	Zira
8	„		„	Jullandhar
9	„	„	„	Sammana
10	„	„	„	Jammu
11	„	„	„	Dhabwali Mandi
12	„	„	„	Multan City
13	„	„	„	Sadhoaura
14	„	„	„	Nikodar
15	„	„	„	Narowal
16	„	„	„	Ghardiwala
17	„	„	„	Lahore City
18	„	„	„	Sankhatra
19	„	„	„	Hoshiarpur
20	„	„	„	Kasur
21	„	„	„	Jandiala Guru
22	„	„	„	Amritsar

24 Submitting great rejoicings for dignity of acharyapad

Chuni'al Ujamchand,
Palanpur wala, BOMBAY

25 We are extremely rejoiced on your being given acharyapadship there by the Sangh you well deserved it Since long time we now earnestly hope and wish you will be long spared to grace the Jain religion and premote the well being of the Jain Community and Sadhumandal in General also

Chhotalal Premji, BOMBAY

26 Hearty Congratulations for acharya padvi
Deokaran Mulji, Bombay

27 Hearty Congratulations for Sooripad real worth appreciated live long for Jainism

Motichand Kapuria Bombay

28 Please accept 1008 wandan is highly pleased
Mohanlal Hemchand Bombay

29 Felicitations for high edification real worth appreciated

Chunilal Virchand, Bombay

30 We have heard with great pleasure your installation to acharyapad you are rightful successor to Shri Atmaramji Maharaj sincerely wish you long life and may you make oonnati of Jainism earnestly wish your early Darshan

Hirachand Motichand Dalichand, Jevari
Sisodariwala, Bombay

FROM
BOMBAY *30 November, 1924*

To
SHREE SANGHA GUJRANWALA,
LAHORE CITY

Give Acharya Padvi tomorrow first December to maharaj shree Vallabhvijayji do this without fail and inform by wire

Lalitvijayadi, Munimandal

2	Copy	to	srisang	Ramnagar
3	"	"	"	Ambala
4	"	"	"	Patti
5	"	"	"	Ludhiana
6	"	"	"	Ropar
7	"	"	"	Zira
8	"	"	"	Jullandhar
9	"	"	"	Sammana
10	"	"	"	Jammu
11	"	"	"	Dhabwali Mandi
12	"	"	"	Multan City
13	"	"	"	Sadhoaura
14	"	"	"	Nikodar
15	"	"	"	Narowal
16	"	"	"	Ghardiwala
17	"	"	"	Lahore City
18	"	"	"	Sankhatra
19	"	"	"	Hoshiarpur
20	"	"	"	Kasur
21	"	"	"	Jandiala Guru
22	"	"	"	Amritsar

FROM

BOMBAY *30 November, 1924*

To

SETH NAVINCHAD HEMCHAND,

LAHORE CITY

Give acharya padvi tomorrow first December to maharaj shree Vallabhvijayji Do this without fail and inform by wire

Lalitvijayadi, Munimandal

2 Copy to Seth Maganlal Harjivandass, Lahore
3 Copy to Seth Gulabchandji Dhadha Jain House Bazaz Hatta, Lahore City
4 Copy to Seth Dalelsingh Ticamchand, Lahore
5 Copy to Seth Punja Bhai Dipchand, Lahore
6 Copy to Seth Govindji Khusal, Lahore
7 Copy to Seth Kalidas Savchand, Lahore
8 Copy to Seth Sumerchandji Surana Lahore
9 Copy to Lala Hazarimalji Johari, Lahore
10 Copy to Babu Dayalchand Johari Lahore
11 Copy to Shrisangh Suratghar, Lahore

"मुनिमहाराजों के अभिनंदन पत्र"

(१)

वन्दे श्री वीरमानन्दम्

१००८ पूज्यपाद आचार्य भगवान् श्री गुरु महाराजजी सपरिवार की सेवा में—लाहौर—घाट कोपरसे सेवक वर्ग की १००८ वार वंदना स्वीकार होवे—कल रात्रि को प्रतिक्रमण बाद मणिलाल सूरजमल्ल की मारफत तार द्वारा आपकी आचार्य पदवी का समाचार सुन कर जो आनंद मुझे हुआ है ज्ञानी महाराज ही जानते है इस खुशी में क्या लिखूं? मारे खुशी के विवश हो रहा हूं बस इतना ही लिखता हूं कि आज का दिन मेरे लिये तो क्या स्वर्गवासी प्रातः स्मरणीय जैनाचार्य न्यायाम्भोनिधि श्रीमद्विजयानन्दसूरि—आतमारामजी—महाराजजी को सच्चे गुरु तरीके मानने वाले हर एक जैन बच्चे के लिये स्वर्णाक्षर में लिख लेने वाला हुआ है क्योंकि "मेरे बाद पंजाब की सार संभाल वल्लभ लेवेगा" इस गुरु वचन को श्रीसंघ पंजाब ने आजके रोज आप को उन गुरु महाराज के पट्ट पर कायम करके सत्य कर दिया है मैं श्री संघ पंजाब को अनेकशः धन्यवाद देता हूं और शासन देव से प्रार्थना करता हूं आपका सतारा बुलंद होवे ताकि गुरु महाराज का नाम अधिक रोशन होवे।

आपके चरणों का किंकर—

ललित की अनेकशः वंदना

मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी—सप्तमी—

मंगलवार

ता० २-१२-२४

(नोट) यहा घाटको पर में इस बात की खुशी सकल श्री सघ में फैल गई है कल अष्टमी को श्री फल की प्रभावना तथा पूजा पढ़ाने का श्रीसघ का विचार है। कुछ साधर्मि वात्सल्य या अमुक रकम श्रीमहावीर जैन विद्यालय को इस प्रसंग की खुशी में देने का विचार भी श्रीसघ का है जो बने सो खरा—

द० सेवक ललित की वदना।

लघु सेवक की त्रिकाल वदना स्वीकारनी जी सेवकों की चिरकाल की आशा आज सफल आप श्री जी ने करी है और सेवक वग की पदवियों की शोभा भी अभी हुई है जो आप श्री तरत नशीन हुये है सच्चा वारसा आप श्री जी को ही प्राप्त हुआ है। द० सेवक उमग की वदना.

(२)

श्रीः।

*जामन. स्थ सु मडल त थी लाहोर श्री युत नि य सू. जी उ सोह जी म प. यथा. साथ मा था आपनो पत्र त श्री सघनोतार आनद भरेलो मल्यो छे वाची आनद भर थयो छे गु म नी. इ थी सर्व कार्य महानद साथ थयु ते खुशी नी वात छे

(३)

लाहोर।

श्रीयुत वल्लभाचार्य ता० उपाध्यायजी आदि सर्व मुनिराज

* ज्ञानवृद्ध वयोवृद्ध पर्यायवृद्ध १००८ श्री प्रवर्त्तकजी महाराज जी श्रीकान्ति विजयजी महाराजने योग्य उपदेश-हित शिक्षा द्वकर उत्साह बढाया है यो भाग उनकी आज्ञा होने पर जैन पेपर आदि द्वारा लोगों के उपकारार्थ प्रकट कराने की इच्छा है।

योग्य अहमदावाद थी हमवि० ता० पन्यासनी आदिनी मालुम थाय तार पहोच्यो आनद थयो आपनो पत्र ता० मान पत्र वाची आनद थयो तमारी पदवी थी. .. . सुरि पण खुशि थया छे. छापेली मानपत्रनी पाच नकलो मोकलावशो

(४)

ॐ

ता० ७—१२—२४

वन्देवीरम्

आचार्य अजितसागर सूरि
ठ० वाघणपोल जवेरीवाड
अमदावाद

लाहोर मध्ये श्रीमान् जैनाचार्य विजयवल्लभ सूरि जी तथा उपाध्याय सोहन विजयजी विगेरे योग्य सुख साता और वदना आपको ता० १–१२–२४ को प्रात काल में आचार्य पद की क्रिया समग्र पजाब सघ की तरफ से हुई उनकी तार द्वारा खबर पढ़ते ही हम अत्यत आनदित हुये हैं और आप जैसे धर्मोद्धारक को यह अमुल्य पद शोभास्पद है आपके द्वारा जैन शासन के उद्धार के अनेकानेक कार्य बनते रहें यह हम शासनदेव से प्रार्थना करते हैं विनय सपन्न पन्यास सोहन विजयजी को उपाध्याय पद दिया जिससे बहुत खुश हुए हैं

ले० हेमेन्द्रसागर की वदना
१००८ वार स्वीकारें
अमदावाद

(५)

सीनोर ।

श्री श्री श्री आचार्य उपाध्याय जी तथा सुमति विजयजी आदि योग मुकाम सीनोर थी मुनि अमरविजय आदि ठा० ३ ना

तरफ थी वदना सुख साता यथा योग्य वाचनी, लाहौर से आया पत्र वाच के आनद हुवा, हम तो अब सर वात मे वंक हुवे हैं, आपने गुरुमहाराज का पद लिया है सो खूब ही पावना यही हमारा आशीर्वाद है सब साधुओं को वदना सुख साता यथा योग्य कहना मिती १९८१ ना मागसर वदि ८ ।

(६)

मु० लाहोर आचार्य महाराज श्री श्री श्री वल्लभ विजयजी उपाध्यायजी सोहन विजयजी आदि योग्य धोलेरा थी मुनि मोती विजय पद्मविजय मणि विजय ठा० ३ ना वदनानुवदना—त्याना समाचार छापा द्वारा वांची अत्यत आनद थया छे।

(७)

वलाद—मागसर वदि १

श्री परमोपगारी शातदांत त्यागी वैरागी गभीर धर्म स्नेही परम कृपालु परम पूज्य भट्टारक आचार्य महाराज ना गुणे करी विराजमान गुरुदेव श्री श्री श्री १००८ श्रीयुत विजयवल्लभ सूरीश्वर महाराजनी आदिना चरण कमलमा सेवक विवेक विजयनी वदना अवधारसो जी तथा मुनि श्री सुमति स्वामीजी तथा तपस्वी जी तथा पन्यासजी श्री उपाध्यायजी श्री सोहन विजय जी तथा पन्यासजी श्री विद्याविजय विचारविजय सागरविजय समुद्रविजय उपेंद्रविजय आदिने वदनानुवदना कहसो जी, वलादमा आजेवदी १ नारोजे आया छु आपनी सुखसाता ना समाचार अव सरे लखना कृपा करसो जी, शेठ फूलचद खेम चद तथा मोहनलाल ना मुख जवानी थी लाहौर ना समाचार सामलीने घणो आनद थयो छे।

(८)

मागसर सुदि ६

श्री डभोडा

परम पवित्र पूज्य मुनिराज श्री १००८ श्रीमान् श्री वल्लभ विजय जी महाराजजी विगेरे मुनिराजों योग्य सेवक मान, विवेक, सतोष तरफ से वंदनानुवंदना सुखसाता पूर्वक आनद साथे मुनि श्री प० ललितविजयजी के पत्र से आपको आचार्य पद मिल्या वाचकर बहोत हर्ष हुवा, आप पद के योग्य हो अच्छे अच्छे धर्म के कार्य करते हो।

(९)

डभोडा।

श्री परमपूज्य विद्वान शिरोमणि श्री श्री श्री १००८ गुरु जी महाराज श्री आचार्य महाराज श्री वल्लभविजय जी आदि परिवार योग्य विवेकविजयनी वदना अवधारसो जी, आजे प० ललितवि० उमगवि० ना पत्र थी आप साहेबजी नी पदवी ना समाचार जाण्या आनद थयो अवसरे सुखसाता ना समाचारदेशो जी द० विवेकविजय सुदि ६

(१०)

लाहोर मध्ये शान्त दान्त परम पूज्य परमोपकारी एवा अनेक गुणेकरी बीराजमान आचार्य महाराजजी श्री विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराजादि कपडवज थी लि सेवक कीर्तिविनी वदना १००८ वार अवध रशोजी वीजु आप श्री जीनी कृपा थी आनद छे आप श्री जी ने आचार्य पदनी तथा प महाराजजी श्री सोहनविजय

जी महाराजजी ने उपाध्याय पदनी साभली अत्यानद थयो छे मागसर सुदि १२ ।

सेवक कीर्तिनी वंदना

द सेवक छोटा कीर्तिकी त्रिविध त्रिविध वंदना पूर्वक बडी खुशी हुई अमारा आत्मा बहुत आनद भया ए काम बहुज अच्छा हुआ है आपका पुण्य तेज है, प्रथम कान्फरन्स वखत पण करने की श्रावकों की मरजी हुई पण आपने ना पाडी तो अब दूसरे को ठपका का वखत नहीं रहा और सबलोक बडी खुशीसे ए काम करने को सामिल हुए और प्रतिष्ठाका मामला में बडी धाम धूमके साथ हुई अमारे को जरा मनमें दिलगिरी पैदा हुई पण अमदावाद से और प. ललितविजयजी की चिट्ठी से सुनके बडा आनद हुआ है ।

(११)

श्री वीर स २४५१ वि १९८१
श्री आतम स २६ मागसर सुदी १०

प्रात स्मरणीय चारित्र चुडामणि यतिपति शासन सुभट कलिकाल कल्पवृक्ष मुनिचक्र चुडामणि स्याद्वादि सकल सद्गुण विभूषित परोपकारनिष्ठ श्री श्री श्री १०८ जैनाचार्य श्री विजयवल्लभसूरि जी महाराज आदिनी सेवामां लाहोर ओलपाड (सुरत) थी सेवक विनयनी वदणा नी साथ मालूम थायके आपनी पदवी नो तार सुरत आवेल त्यांथी मने आजरोज खबरमल्या, तेथी लखवानु के लायक ने लायक मानमले तेमां आनदथाय ए स्वाभाविक छे द. सेवक विनयनी वदना

स्वीकारशोजी दोशी जमनादास भगवानजीनी वंदना १०८ वार आपनी पवित्र सेवामा स्वीकारशोजी जतलरग्रानु के आपने आचार्य पदवी मली तेथी अमे नह खुशी थया छीये ।

(१२)

श्रीमद् विजय धर्मसूरि गुरुभ्योनम.

मीती मार्गशदी १४ धर्म म ३

शात्यादि अनेक गुण गणालकृत शासनोन्नतिकारक विद्वद्वर्य श्रीमान् विजयवल्लभसूरिजी महाराज आदि ठाणा सर्वेनी पवित्र सेवा मा मु, लाहोर, सविनय १००८ वार वंदना साथे विनती के आपनो पत्र मल्यो हतो विशेष पहलो पत्र लख्यावाद "जैनपत्र" थी आप श्रीने आचार्य पदवी थयाना समाचार जाणी अमो सर्वे घणाज खुशी थया छीए, आगरानो सघपण खुशीथयो छे, आप जेवा योग्य पुरुषो ने योग्य पदवी थइ ते घणुज ठीकथयु छे ।

ली सेवक जयतविजयनी वंदना

(१३)

कपड वज

स्वस्ती श्री लाहोर मध्ये शात दात महत त्यागी वैरागी छत्रीस गुण युक्त परमपूज्य पवित्र परमोपकारी धैर्यगभीर अनेक उपमा लायक श्री श्री श्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वर महाराजजी साहिबनीसेवा मा कपडवज थी ली चमा श्री जी म माणिक्य श्री वसत श्री, सर्वेनी वदना कोटीवार आपना पवित्र चरणों में कृपा करके स्वीकार करनाजी, और आपको पद प्रदान का

मगलकारी श्रेष्ट समाचार जैन से और कुकुम पत्रीसे जानकर बहुत आनद हुवा है जी योग्य बात बनने से हर्ष हुवे इस में नवाई क्या है प्रथम से ही सवजगा में उपकार कररेहे होजी अच्छा अच्छा धर्मका काम किया है जी ।

मगल अस्तु

ली माणिक्य श्री

"सद् गृहस्थोंके अभिनंदन पत्र (हिन्दी)"

(१)

फर्नहिल नीलगिरीज़

१२-१२-१९२४

श्रीमन्तो महानुभावा मुनिवरा' मग्रश्रेयम्, चिरजीवी भागमल्ल से ज्ञात हुवा कि थोड़े दिनहुए जैनसमाज ने श्रीमानों को जैनाचार्य की पदवी से सत्कृत किया है, मैं सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ हू । यद्यपि आप जैसे महात्मा पदवी को या उपाधि की इच्छा नहीं रखते तथापि हम सबका कर्त्तव्य है कि उनका सत्कार करते हुए अपनी कृतज्ञता बतलायें, बहुधा ऊची पदवी आप जैसे महात्माओं के शुभनाम के साथ ही शोभा प्राप्त करती है ।

विनीत

हीरानद शास्त्री

(२)

बीकानेर

ता १४-१२-२४

श्रीमान् मान्यवर सद्गुणालङ्कृतधर्मनिष्ठ परोपकार व्रत परायण विद्यावारिधि जैनाचार्य श्री १००८ श्री वल्लभविजय जी महाराज आचार्य जी महोदय योग्य जयदयाल शर्मा का सविनय प्रणाम प्राप्त हो, श्रीमानों को आचार्य पद की प्राप्ति सुनकर चित्त को अत्यत ही प्रमोद प्राप्त हुआ, वास्तव में यह पद आप जैसे विद्यावारिधि सौजन्यादि गुणाकर महानुभावों के योग्य ही है श्री सर्वज्ञ प्रभु से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप चिरायु होकर अपने सद्ज्ञान तथा विद्या आदि सद्गुणों के द्वारा देश का चिर समय तक कल्याण करें।

जयदयाल शर्मा शास्त्री

(३)

श्री आत्मानद जैन सभा अंबाला शहर

४ दिसबर १९२४

स्वस्ति श्रीमत्पार्श्वजिन प्रणम्य तत्र श्री लाहोर शुभ स्थाने विराजमान पूज्यपाद परमोपकारी श्री जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्रीमद्विजयवल्लभसूरिजी महाराज उपाध्याय श्री सोहन विजय जी महाराज श्रीसुमतिविजय जी महाराज श्री पन्यास विद्याविजयजी महाराज तथा अन्य सर्व साधु समुदाय की सेवा में दासानुदास भागमल्ल की वदना नमस्कार १००८ वार अभु ठिओमिके पाठ सहित स्वीकार होजी। आगे निवेदन यह है कि सेवक कल ही गुड़गावाँ से वापिस आया है। वहा की

परीक्षा में मैं और हमारे स्कूल के मास्टर विलायतीराम दोनों प्रथम कक्षा में उत्तीर्ण हुए।

यहां आते ही लाहौर के प्रतिष्ठा महोत्सव के आनंददायक समाचार सुने। विशेषकर आप दोनों मुनि महाराजों की पदवीयों का हाल सुनकर चित्त इतना प्रसन्न हुआ कि उस प्रसन्नता को वर्णन करने के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। क्या ही अच्छा होता यदि मैं भी अपनी आंखों से यह दृश्य देख पाता। परंतु मुझ जैसे निर्भाग्य के भाग्य में यह शुभ अवसर कहां।

आपको इन पदवीयों पर एक बार और बधाई देता हूं और समाज की दक्षता पर मुग्ध होरहा हूं जिन्हों ने ऐसे स्वर्ण मय अवसर का ऐसा अच्छा उपयोग किया।

यही इच्छा है कि समाज के सिर पर आपका छत्र अनंत काल तक झूलता रहे और यह समाज उन्नति को प्राप्त हो।

सेवक—

भागमल्ल मौद्गल

(४)

श्री

जयपुर ता० ६-१२-२४

स्वस्ति श्री लाहौर शुभ स्थान सकल शुभोपमाकारी विराज मान पूज्य श्री १०८ श्रीयुत आचार्य महाराज श्री विजयवल्लभ सूरि जी महाराज साहब की पवित्र सेवा में दास गुलाबचंद ढड्ढा की सविनय वंदना मालुम होवे, आपका कृपा पत्र मिला पढकर आनंद हुवा मेरी दिली चाहना पदरा बरस से आपको

परमोपकारी स्वर्गवासी सूरीश्वर की गद्दी पर देखने की थी, आपकी दयालुता, योग्यता, धर्मज्ञता, विद्वता, उपकार तप, जप, क्षमा वगैरह गुणों को लेकर आपको इस पद पर पदरों बरस पहिले ही देखने की इच्छा थी, परतु समय आने पर फल मिलता है। मुझे अगर जरा भी सूचना किसी द्वारा इस शुभ क्रिया की मिल जाती तो मुझे कुच्छ भी तकलीफ होते हुवे मैं अवश्य हाजर होता, परतु मैं इस बात के लिए बिल कुल अंधेरे में था, हाला के मैंने कई दफे यात्रा में विचार भी किया था कि प्रतिष्ठा के समय आचार्य पदवी दी जावे तो अती श्रेष्ट हो, दाग पके जब करे के कठ रुक जावे, वाकई आपको सूरि पद प्राप्त होने मे जितनी उमग की लहरों से हृदय कमल प्रफुलित हुवा उस से कइ दरजे जियादा मेरी बद किसमति पर अफसोस और रज हुवा, जिसको मैं लिख नहीं सकता, खैर भावी प्रबल, आत्मा को सतोष इस ही बात पर दिया जाता है कि २८ बरस के बाद हमारे उपकारी महात्मा के योग्य पट धर को हमने अपना शिरताज देखा, इस दास की प्रार्थना यही है कि आप सिंह जैसे प्रबल, चद्रमा के जैसे उज्वल सूर्य जैसे तेज प्रताप वाले होकर, बली के जैसे शूरवीर होकर जैन जैसे दयालु होकर स्व परोपकारार्थ आरोग्यता पूर्वक इस पृथवी पर विचर कर सब जीवों के तारने वाले बने, कलम जियादा कहना नहीं करती इस वास्ते आचार्य श्री १०८ श्रीयुत विजयवल्लभ सूरि महाराज की जय बोलते हुवे इस अरजी को समाप्त करता हू।

फकत—

दास गुलाबचन्द ढढ्ढा

(५)

156 / A Harrison Road, Calcutta

17-12-94

श्री मान्यवर १००८ श्री आचार्य वल्लभविजयजी महाराज १००८ श्री उपाध्याय श्री सोहनविजयजी महाराज मुनि मडल जोग कलकत्ते से दयालचद का वदना तार श्रीसघका आया जिसमें आपके आचार्य वा उपाध्याय पदपर विभूषित होनेकी खनरथी

श्रीसघने जो उपाधिया आपको दी हैं वह वहुत उचित ही किया क्योंकि वडे गुरु महाराज जीके बाद पजान में जरूरत ही थी।

द दयालचद

(६)

१५६ । A हेरीसनरोड

कलकत्ता 17-12-24

श्रीजैन श्वेताम्बर मघ लाहौर जोग लिखी कलकत्ते से दयालचद का जय जिनेश्वरदेव.

आपका तार मिला आपके शुभ समाचार पढकर बडी खुशी हुई कि आप लोगों ने आचार्य पदवी से श्री वल्लभ विजयजी महाराज को वा "उपाध्याय पदवी" से श्री सोहन विजयजी महाराज को विभूषित करा पजान देश में ही इस कार्य की होने की निहायत आवश्यकता थी, जो कुछ हुआ, नहुत ही उचित हुआ, आपके इस कार्यपर आप लोगों को धन्यवाद दिया जाता है।

आपका सेवक—दयालचद

(७)

श्रीमान् शासनरक्षक पूज्यपाद आगमज्ञाता श्री १००८ श्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराज की सेवामें लाहोर अनेकश' वंदना सहित निवेदन कि स्वास्थ्य सुखवृत्ति के समाचार दीर्घ समय से ज्ञात नहीं हुवे, प्रसगोपात लिखने की कृपाकरें, आचार्यपद समर्पण समय में क्षुद्रात्मा को स्मरण नहीं किया इसका अत्यत खेद है लेकिन आनद तो इस बातका है कि पजाब ने समग्र भारत के जैनसघ की इच्छा सम्पूर्ण की, विशेष क्या लिखु आनद असीम है।

चदनमल नागोरी

छोटी सादरी

ता ११-१२-१९२४

(८)

श्रीमद् वीराय नम'

स्वस्ती श्री लाहोर नगरे महाशुभस्थाने शांत दांत सूर्य समान तेजस्वी चद्र समान शीतल स्वभावी कल्पवृक्ष समान परोपकारी भारडपक्षी समान अप्रमत्त ससारी जीवोंको दु खरूपी समुद्र में पार करने के लिये नौका समान इत्यादि अनेक शुभ गुण गुणालकृत शास्त्र विशारद जैनाचार्य श्री श्री १००८ श्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराज उपाध्याय श्री सोहनविजयजी मुनिश्री सुमति विजयजी व विद्याविजयजी, तपस्वी गुणविजय जी, विचारविजयजी समुद्रविजयजी सागरविजयजी, आदि महा राज साहेब की सेवा में मुंबई से सादरी श्रीसघ की वदना १००८ वार असुट्टीयोमी अभ्यतर सहीत अवधारना जी, वि॰ विनती

साथ लिखना है कि आप श्रीका कृपापत्र नहीं सो आप श्री अमूल्य वग्त लेके लिखने की कृपा करनाजी वर्षा ऋतुमें कृपाण लोक मेघ की राह देखते है उसीतरह, हम भी आप श्रीका अमृत तुल्य उपदेशक पत्र की राह देखते हैं यहांपर देवगुरु महाराज जी की कृपासे सुखशांति है आप श्रीकी सुखशाता की सदा चाहना रखते हैं और आप श्रीने श्रीसघ के अति आग्रह से आचार्य पद को ग्रहण किया है उसीसे हमको बहोत आनद प्राप्त हुआ है, देवाधिदेव से हाथ जोडके यही प्रार्थना हम करते है कि ऐसा शुभ अवसर हमको वारवार प्राप्त हो।

म १६८१ पोसवदी २ शनीवार

द से सागरमल की १००८ वार वदना स्वीकारशोजी
से दीपचद की १००८ वार वदना ,,
से सेमसल की १००८ वार वदना ,,
से तेजमल की १००८ वार वदना ,,
से सीरदारमल की १००८ वार वदना ,,

(६)

मुम्बई

१२-१२-२४

"आनदित अनुमोदन विनती पत्रिका"

पुज्य महान उपकारी १००८ श्री असर नाम विजयवल्लभ सूरि महाराज के चरण में ली आपका दासानुदास गुरुभक्ता-भिलाषी प्रभु गुण गायक प्राण सुख मानचद के १००८ वदना आप चरणमें कबूल करेंगे शुदि १०मी के दिन मु० श्री बालापुर में उत्सव प्रसग में मैं गया था, वहा सुरम्य डेरा सुन्दर सब

सुने सुवास आइ, मन प्रफुलित हुआ, अतरीक जी और माइक जी की यात्रा करके आज मुनई आया पुज्य प० ललित विजय जी महाराज को वदना करने गया, मन की खुशाली जाहेर की उनों की खुशाली और आनद की क्या बात है सची गुरु भक्ति का प्रभाव छुपा नहीं रह सकता है शुभ प्रसग की सब हकीकत का साराश पन्यास जी ने मुझे कहा, सुन कर बहोत ही हर्ष हुआ जो बात न्याय दृष्टि से विरुद्ध पचकार भी कुनूल करे उस में दो मत हो ही नहीं सकते है, लायक को लायक मान मिलने से मनुष्य तो क्या पर देव भी अनुमोदना करते है पुज्य मुनि महाराजों और सुज्ञ श्रावकों ने इस शुभ कार्य के लिए जो प्रेरणा की हुई है उनको भी धन्यवाद है पच महाव्रत धारी साधु मुनिराज मडल में आपको सर्वोत्तम अध्यक्ष पदवी जो दी गई है उनको परम पुज्य आचार्य महाराज १००८ श्री विजयानद सूरि महाराज की परपरा में सुवर्ण अक्षर मय बनाव समजता हू और चाहता हू कि शासनदेव की सहायता से उस परम पद को आप दे दीप्यमान कर दिखावें।

तथास्तु—

लि० दासानुदास

प्राणसुख मानचंद

(१०)

जीरा १६-१--२५

सूरिजी महाराज दामे इकबाल हो

आजजानव गधामल्ल ईश्वरदास नथुराम बाबूराम याद वदना नमस्कार दस्त बस्ता इन्द्रासी के पाठ से १००८ बार मारुन

आके आप श्रीजी आचार्यपद की गद्दी को जीनत बख्श कर सब पर बहुत महरबानी की है, हम आपके अजहद मशकूर हैं और आपको बहुत बहुत मुबारकबाद देते हैं और शासन देवता से दुआ करते हैं कि आप श्रीकी जिन्दगी बहुत लम्बी हो, और जैनसमाज और जैनशासन की दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की करसकें।

(११)

पूज्य मान्यवर गुरुजी विजयवल्लभसूरिजी की पवित्र सेवा में नागपुर से प्यारेलाल की वन्दना स्वीकृत हो, कुछदिन हुए भाई दौलतराम का पत्र मिला था, जलसे का तमाम हाल मालूम हुवा, और आपको आचार्यपद से भाईओं ने विभूषित किया समाचार पढकर अत्यत हर्षहुवा, और इस दास की तरफ से वधाई स्वीकृत हो।

भवदीय दासानुदास

प्यारेलाल जैन

१७-१२-२४

(१२)

पटियाला

नथुरामजैनी अग्रवाल

श्रीमान् पूज्य श्री १००८ श्री श्री आचार्य महाराज श्री मुनि वल्लभविजयजी महाराज वा श्री उपाध्यायजी महाराज श्री श्री मुनि सोहनविजयजी महाराज और सब मुनि राजगान के चरणों में विनय पूवक निहायत आदाब से वंदना नमस्कार मालूम हो, प्रतिष्ठा का हाल सुनकर दिलको बहुत आनद और

खुशी हुई और मुझको यह सुनकर और अजहद खुशी हुई कि श्रीसंघ पंजाब ने आपको ही अपनी सर प्रस्ति के आचार्य पदवी और सोहनविजयजी महाराज को उपाध्याय पदवी दी हैं, बेशक आप इसी लायक हैं।

तोताराम दीनदयाल दुर्गादास की तरफ से आपके चर्णों में नमस्कार पहुचे।

२१—मगसर—१६८१

(१३)

रियासत, मलेरकोटला

ता ७-१२-२४

मुन्शी करीमबखश

१००८ श्री श्री श्री श्री श्री, श्रीमद् विजयवल्लभ सूरि धर्माचार्यजी महाराज के पवित्र चरणों में इस दास की विनती मन्जूर होवे, मुबारक हो मुबारक हो मुबारक हो कि हजूर के कमल चरणों से आचार्य पदवी की गद्दी फैजयाब हुई तमाम दुनिया को उसकी खुशी है।

(१४)

श्री

२४५१

सि० श्री लाहोर महा शुभस्थाने पूज्य परमदयाल ज्ञान सागर पंचाचार पालक षट्त्रिंश गुणे करी सुशोभित श्री १००८ श्री श्री मद् आचार्य श्री श्री विजयवल्लभ सूरि जी आदि मुनि मंडल की सेवा में—

आमपुर (मेवाड) से आपके चरण कमलोपासक तारावत चंपालाल-निहालचंद आदि परिवार की द्वादशावर्त्त वंदना

विनय स्वीकारियेगा जैनपत्र आया उसमें मगसर सुदि ५ साडा सात बजे श्री जी को श्री सघने योग्य सोटचके सोने में हीरे माफिक पद समर्पण के समाचार पोस सु० ५ को बाचकर अत्यानद हुआ, बारबार श्री सघ का धन्यवाद है, इस देश में ४०० घर १००० मनुष्य है जो सब एक आवाज से धन्यवाद देते हैं श्री सघको–और आप तो गुणवान ही हैं, सेवकों को समाचार १ माह के बाद मिले ऐसे कर्मवश पडे हैं कि कर्मों की बलिहारी मिति पोष शुदि १०–१६८१ निहालचद की वदना सविनय द्वादशावर्त्त स्वीकारियेगाजी—

श्रीयुत उपाध्याय जी श्री १०८ श्री सोहन विनयजी महाराज जी से मेरी सविनय वदना अभुट्टियोमि अभिंतर सहित स्वीकारियेगाजी।

(१५)

ॐ

सोजत

ता० ७-१-२५

श्री श्री १००८ श्री श्री विजयवल्लभ सूरीश्वर जी महाराज की चरण सेवा में सोजत (मारवाड) निवासी समग्र "श्री शाति वर्धमान जी" तथा श्री महावीर लायब्रेरी के जैन श्वेताम्बर समस्त सघ नम्रवदना के साथ अपने हार्दिक प्रेम का प्रकाश इस माफिक करते हैं कि पजाब समग्र श्री जैन सघ ने एकत्र होकर लाहोर जैसे केपिटल स्थान में आप श्री को सूरि पद से विभूषित किया वह पत्र हमारे यहा पहुचा, सो तो सघ की भक्ति गुरु प्रते होनी ही चाहिये, परन्तु आप श्री को स्वर्गवासी श्री मद्विजया-नद सूरि महाराज ने पहिले ही से यह भार आपके लिये रोशन

किया हुआ है, वैसे ही आप श्री कृतज्ञता सेवा धर्म, स्व सिद्धान्त प्रतिपादन के भावों में निभ्रान्ति होते हुए सानन्द यहा एकत्र होकर पत्राव के पत्र को सुनते हैं, हम आपके अनुक्रम विधान कार्य निश्चितात्मा पर प्रसन्नता प्रगट करते हैं कि आपने इस भारतवर्ष में स्वर्गवासी सूरीश्वर जी के बाद आनद से समय समाप्त कर इस पदवी को सुशोभित होरहे हैं इस अवसर पर हमारे हृदयाकित विचार आप श्री की तरफ आकर्षित हैं विविध प्रकार से आपके शासन काल में स्वय परिज्ञान जो कुछ कार्य वाई करते हुए, न्याय तथा शासन सेवा के निमित्त हित दरसाया है उसकी प्रशसा हम पूर्णतया नहीं कर सकते, प्रत्युत' हम में से कई शख्सों ने आप से धर्मोपदेश सुनने का आनद और सौभाग्य अनुभव किया है, और इसी से हम आप की न्याय तत्परता शैली से पूरण परिचित हैं।

जिस प्रेम और निष्पक्ष भावों से ससार के प्राणि मात्र पर आपकी करुणा दृष्टि होरही है उसके लिए हम आपकी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं।

जिन मनुष्यों को आपके पूरण परिचय का सुअवसर मिला है उन हृदयों को आपके सामाजिक नैतिक तथा धार्मिक जीवन के सभ्य व्यवहार ने अतिशय हम को आकर्षित कर लिया है, यहा पर श्री महावीर लायब्रेरी तथा शाति वर्धमान जी की देन की पेढ़ी तथा श्री वर्धमान जैन कन्या पाठशाला की स्थापना आपके उपदेश प्रेरणा का ही कारण है कि जिनका निरीक्षण राज के बड़े ओफिसरों ही न नहीं वरन श्रीमान् His Highness Maharaja Sahib Bahadur of Jodhpur और कई मुनिराजों

ने सस्थाओं से पगला करके प्रजाहित कार्य में प्रेम प्रदर्शित किया है, अत आपकी सादगी का साधारण जीवन वर्णन किया जाय तो एक दफतर की आवश्यकता है आप श्री मान पूज्यवर हमारे हिवडे के हार और एक जैन समार में अनुकरणीय आचार्याधि राज है हम को सम्पूर्ण आशा है कि आपके आगामी जीवन में भी हमारे साथ सहानुभूति बनी रहेगी, और उसके प्रताप से हमें उज्वल सफलता प्राप्त होती रहेगी-आपकी शासन सेवा से भारत वर्ष की प्रजा का उपकार और उद्धार होगा, चद्रमा का मुख विश्व सेवा से ही उज्वल है, आप पश्चमी गति गामी मुनिराजों में केंद्र हो, यदि आपकी शक्ति का सघटन हमारे अदर न होता, तो आज मारवाड के गाय भैंस लरडी बकरी के अभय दान में आप की बनाई सस्था सौभाग्य प्राप्त करने का गौरव रखती है वह अवसर कहा था, आप श्री की चरण सेवा में रहने वाले मुनि मडल में यहा का सघ वदन लिखाते हैं और आशा रखते हैं, कि यही मडल जगत को ऐक्यता का पाठ समझा कर पालन करने में चमत्कारिक शक्ति फैलावेगा।

भडारी चैनराज, खीवराज, मुता मूलचद रातडीया रतनचद व हीरालाल सुराणा मुता जोरावरमल्ल कोचर किशोरीलाल, रीखबदास मदनराज कुशलराज आदि सकल सघ की वदना १००८वार अवधारशोजी।

सद्गृहस्थों के अभिनंदनपत्र [गुजराती]

(१)

श्रीजैन आत्मानंद सभा भावनगर

ता ८-१८-१९२४ मागसर सुदि १३ सोमवार

अनेक गुण गणालकृत परमकृपालु पूज्य पवित्र आचार्य महाराज श्री विजयवल्लभ सूरीश्वरजी महाराजनी पवित्र सेवा

में लाहौर · विनति पूर्वक अपूर्व आनद सहित जणाववा रजा लइये छीये के आ सभानी लांबा वखतनी अभिलाषा आकांक्षा श्री पजाबना श्रीसघे आप कृपालु श्री ने आचार्य पद आपी जे पूर्ण करी छे ते माटे पजाबना श्रीसघ ने लाखो धन्यवाद देवा साथे आ सभा पोतानो पण अपरिमित आनद हर्षना आवेश पूर्वक जणावे छे, साथे परमात्मानी पवित्र अतः करण थी प्रार्थना करेछे के आप आ आचार्य भगवाननु उच्च-पद दीर्घायु थइ भोगवो अने शासन सेवा करवा निरतर विशेष भाग्यवान थाओ ! बस !-हृदयना पूर्ण उमलका साथे आ सभा पोतानो आनद अने भावना आरीते आपनी सेवामा रजू करेछे।

प्रथम आचार्य पदवी देवा अने अपाया पछी हर्ष जाहेर करवा—अभिनदन आपवा एम बे वखत आसभा तरफथी श्रीपजाबना श्रीसघ ने तारो करवामा आव्या हता ते सहज जाणवा माटे लख्यु छे।

लि॰ नम्रसेवक

गांधी वल्लभदास त्रिभुवनदास

(आसी सभानी वती) नी १००८ वार वदना अवधारशोजी.

लि॰ सेवक—गुलाबचद आनदजी नी १००८ वार वदना अने आ पदवीनो आनद स्वीकारशोजी।

(२)

श्रीमहावीर जैन विद्यालय—मुंबई

ता ३-१२—१९२४

अनेक गुण गणालकृत श्री मन्मुनिमहाराज श्रीआचार्य श्री विजयवल्लभ सूरिजी नी पवित्र सेवा मा लाहोर आप श्रीने

आचार्य पदवी श्रीसंघे पचमीना रोज आरीते सबधमा अमारी मेनेर्जीग कमेटी पोतानो सतोष जाहेर करवा वदना पूर्वक मने फरमास करे छे के आप आचापदने सर्व रीति योग्य छो आवी मेनेर्जीग कमेटी नी वदना स्वीकारशोजी, श्रीसंघे आपने आवु अनुपम मान आपी पोताना गौरवमा वधारो कर्योछे।

श्रीमहावीर जैन विद्यालयनी मेनेर्जीग कमेटीना हुकमथी सेवक मोतीचद गीरधर कापडीया नी वदना अवधारशोजी।

(३)

श्री वीरायनम

श्री महावीर जैन विद्यालयना विद्यार्थीओनी मलेली आजनी सभा प्रात स्मरणीय परम पूज्य मुनि महाराज श्री १००८ श्रीमद् वल्लभविजयजी श्रीने पजाब ना श्रीसंघे बहुमान पूर्वक अर्पण करेल आचार्य पदवी माटे परमोल्लास प्रदर्शित करे छे, जैन समाज ना जीवन रूप अने सस्कृति ना बीज रूप श्री महावीर जैन विद्यालय ना सस्थापक तरिके ना एओ श्री ना अविरत परिश्रमो माटे मात्र शब्दो थीज जे काइ आभार अने पूज्य भाव नी लागणी दर्शावी शकाय ते प्रस्तुत प्रसगे अत करण पूर्वक एओ श्री ना चरण कमल मा नम्रता पूर्वक अर्पण करे छे।

लि० श्री महावीर जैन विद्यालय
ना विद्यार्थी गण नी
सविनय नम्र वदना

मागशीर्ष शुक्ला अष्टमी
वी० स० २४५१

(४)

श्री जैनवनिताविश्राम।

सुरत ता० ९-१२-१९२४

परम पुज्य आचार्य महाराज श्री वल्लभविजय जी साहिब
वि० आप श्री ने आचार्य पदवी नी वात जाणी
अमो आप ने अभीनन्द आपीए छीए

ल० जैन वनिताविश्राम ना
व्यवस्थापक

(५)

ता० १२ १२ २४ मीयागाम

आचार्य महाराज श्री श्री श्री श्री श्री वल्लभविजय जी सूरि जी आदि थाणा मु० लाहौर ली० शा० शिवलाल छगनलाल नीवदना १००८ वार स्वीकारशोजी वी० अम देवगुरु महाराज नी कृपा थी कुशल छे ली० आप श्री ने समस्त जैन श्वेताबर संघे आचार्य पदवी अर्पण करी तेथी हमारा तरफ ना घडा अभीनदन छे

(६)

ता० १२ १२-२४ मीयांगाम

आचार्य श्री श्री श्री श्री श्री वल्लभविजय सूरि तथा आदि मुनिराज मु० लाहौर ली० दलाल शेठ दलसुख गुलाबचद नी वदना १००८ वार स्वीकारशोजी ली० मारा अतर नो जे विचार घणा वखत पर नोहतो ते आशा मारी सफल थई तेथी घणोज आनद आप श्री ने आचार्य पदवी श्री जैन श्वेताबर

सघ अर्पण करी ते मा मारी सहानुभूती छे आजेज अमोये तार करयो छे।

(७)

श्रीमहुवा यशोवृद्धि जैन बालाश्रम

ता १८-१२-१९२४

स्वस्त श्री लाहोर महाशुभस्थाने पूज्याराधे परमपूज्य परमोपकारी अनेक गुणोंकरी विराजमान पूज्य आचार्य महाराज श्री श्री श्री वल्लभविजयजी तथा उपाध्याय महाराज श्री सोहनविजयजी महाराज साहिब तथा मुनिमडलनी अखड पवित्र सेवामां श्री महुवाबदर थी ली, सेवक गुलाबचद मानकचद पारेख (मु श्रीः यशोवृद्धि जैन बालाश्रम) ना १००८ वार वदणा अवधारशोजी सविनय लखवानु के—आप साहिब ने आचार्यपद अने महाराज श्री सोहनविजयजी ने उपाध्यायपद मल्यु, जाणी खुशी थयोछु साथे साथे केलवणीना कार्यो करो छो तेथी विशेषकरी आपने प्राप्त थयेल पदवी ने वधारे उज्वल करो, तेवी मारी श्रीवीर प्रभु पासे याचना छे।

आप श्रीये श्री महावीर विद्यालय जुनागढ, श्रीदेवकरण मूलजी जैन बोर्डिंग, पालनपुर जैन बोर्डिंग, बीकानेर हाई स्कूल, अवाला हाईस्कूल, पजाब मा साडात्रण लाखनु केलवणीफड गोलवाड मारवाड माटे एक लाखनु फड विगेरे घणे ठेकाणे आप श्रीए केलवणी ना उद्धार कर्योछे, ते वात बिन सदेह छे।

लि सेवक

गुलाबचद मानकचद महुवाबदर काठियावाड

(८)

ॐ

श्री महावीर स्वामिने नम

श्री जैनशासननभोंगणदीप्तदिप्ति ,
मिथ्यातमोविघटनाय समृध्य मूर्ति ।
स्याद्वाद पूर्ण जिनपागमपारदृश्वा,
सूरीश्वरो विजयताम् मुनिवल्लभोऽपम् ॥१॥

स्वस्ति श्री पार्श्व जिन प्रणम्य मुनिवृन्द चरण रज परि पुनिते महाशुभस्थाने लाहोर नगर मध्ये शांत, दांत, त्यागी वैरागी, परमप्रभावक, शासनधोरी मुनिगणमार्तंड, शासन सम्राट्, वादिगजकेसरी, निर्ग्रंथचूडामणि शांतमूर्ति, कलि-काल कल्पवृक्ष, विद्वद्रत्न, व्याख्यान कला कोविद, अनेक सिध्धांत पारगामी, श्री जैन शासन प्रबोधपकन सहस्त्ररश्मि सूरिपुरंदर, सूरिचक्र चक्रवर्ति, इत्यादि अनेक गुणालंकार विभूषित पूज्यपाद आचार्य महाराज श्री विजयवल्लभ सूरीश्वर जी ना चरणारविन्द युगममां, श्रीविरावल पदर थी ली० सूरि दर्शनोत्कंठित समस्त सघनी १००८ वार वदणा अवधारशो जी, विशेष अमने जाणीने आनद थयो छे के श्री सघे लाहोर मां आप साहेब ने सूरीश्वर पद नु प्रदान कर्युं छे अने ते पद आपनी शासन सेवानी प्रवृत्ति, शासन सेवानी निशदिन उत्कंठा, जैन शासन नो विजय वावटो फरकाववानी आपनी अभिलाषा अने आपना उत्तम स्वभाव मां सोनु अने सुगध जेवी योग्यता ने पामे छे, अमो खरे खर मानीश कीये छीये के श्री सघे योग्य महात्मा ने योग्य स्थान आप्यु छे तेथी आप श्री ने समर्पेल

घरि पद सर्वथा योग्यजछे अने ते शुभ खबर मलतां अमे बहु आनदीत थया छीये, विशेष आप साहेबजी अमोघ उपदेश द्वारा जगत ने पावन करता सौराष्ट्र भूमि मां पधारी अमो ने दर्शन आपी कृतार्थ करशो ए शुभ आशा राखी आपने अभिनदन आपीए छीए।

वीर निर्वाण सवत २४५१

मौन एकादशी

ॐ शांति. ली: अमेछीए दर्शनाभिलाषी सेवको श्री वेरावल जैन सघ।

शा० खुशाल करमचद, द० देवकरण खुशाल नीवदणा अवधारशो जी।

शा० जेचद खीमजी द० पोते वदणा अवधारशो जी।

शा० हसराज वशन जी नी सही छे द० पोते वदना १००८ वार अवधारशो जी।

शा० वीरजी रामजी द० गीरधर वीरजी नी वदणा अव धारशो जी।

वशा, सोमचद खीमजी, द० वशा, नेमचद माणकचद नी वदणा अवधारशो जी।

(६)

मुम्बई २—१२—२४

परम पुज्य परम कृपालु परमोपकारी अनेक शुभ गुण गणालकृत श्रीमद्विद्वद्वर्य आचार्य महाराज श्री श्री श्री श्री श्री १००८ श्री मान् विजयवल्लभ सूरि जी महाराज तथा उपाध्याय जी श्री सोहन विजय जी महाराज सपरिवार योग्य श्री लाहोर,

मुंबई थी ली० दासानुदास मणिलाल नी वंदना १००८ वार अवधारजो कृपा करशोजी गई काले मानना श्री संघ तरफ नो तार आचार्य तथा उपाध्याय पदवी नो मल्यो सर्वने घणो आनंद थई रह्यो छे।

दासानुदास--

मणिलाल सूरजमल्ल

(१०)

मुंबई ता० ७-१२-१९२४ रविवार

पुज्य आचार्य महाराज श्री वल्लभविजय जी नी पवित्र सेवा मां लाहोर।

आप साहिब ने गया सोमवारे आचार्य पदवी आपवा मां आवी ते खबर सांभली घणो आनंद थयो छे आप ये पद ने तद्दन लायक होवाछतां स्वीकार करवा न होता, परंतु आप साहिब हंसविजय जी महाराज अने कान्तिविजय जी महाराज नी आज्ञा मांन चालता होवा थी तेमना दबाण ने लईने ज आ पद स्वीकार कर्यु छे ते आपना वडी लोंये वखत ने अनुसरी काम कर्यु छे।

मूलचंद हीरजी

नी वंदना स्वीकारशोजी

(११)

पालणपुर ता० १-१२-२४

स्वस्ती श्री लाहोर महा शुभ स्थाने आचार्य महाराज श्री वल्लभविजय जी महाराज साहेब ना चरण कमल मा अत्र श्री

पालणपुर थी लि० श्री सघ समस्त नी वदना १००८ वार अव धारसोजी आज रोज मुबई थी मणीलाल सूरजमल्ल ना तार थी अमारा जाणवामां अव्यु छेके पजाब ना श्री सघ तर्फ थी आने आपने आचार्य पद आपवानु छेआ समाचार सामली श्री सघ मां घणोज आनद थयो छे अने आ सबधी श्री पजाब ना श्री सघे घनुज उत्तम कर्युं छेतेथी अत्रे ना श्री सघ तर्फ थी तार १ मुबारकबादी नो पजाब ना श्री सघ उपर कर्यो छे।

(१२)

ता० ३-१२-१९२४

स्वस्ति श्री लाहोर महाशुभस्थाने पूज्याराधे सर्वेशुभोपमा लायक आचार्य ना छत्रीश गुणेकरी विराजमान आचार्य महाराज श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री वल्लभविजय जी महाराज नी पवित्र सेवा मा मुबई बदर थी ली० आपना चरण कमल ना दास आज्ञा कित सेवक पारेख श्रीमोवन मलुकचद कागदी नी वदणा १००८ वार अवधारशो जी, विशेष विनती साथ लखवानु के आप साहब ने मागसर सुदी ५ ने दिवसे सकल सघनी समक्ष आचार्य पदवी आप्या ना शुभ समाचार सांभली अमो घणाज खुशी थया छीये ।

१९८१ ना मागसर सुदि ८ वार बुधवार

द० सेवक त्रिभुवन मलुकचद नी वदना १००८ वार अवधारशोजी अमारा भाइ न्यालचद देवजी नी वदना १००८ वार अवधारशो जी आजे घाटकोपर महाराज साहब पासे गयो हतो त्यां सघ तरफ थी देरासर जीमां पूजा श्रीफल नी प्रभावना करवा मा आवी हती ।

(१३)

ता० ४-१२-१६२४

परम पूज्य आचार्य महाराज श्री १००८ श्री वल्लभविजय जी महाराज साहेब तथा श्री संघ समस्त मु० लाहोर वडोदरा थी लि० वैद्य बापुभाइ हीराभाइ तथा वैद्य मणिलाल नी १००८ वार वन्दणा स्वीकारशो जी, बाद लाहोर ना श्री संघनो तार आज रोजे मल्यो तेनी हकीकत जाणी सर्व श्री संघ खुशी थयो छे, आप श्री ने आचार्य पदवी मली तथा मुनि (पन्यास) सोहन विजय जी ने उपाध्याय पदवी आपी, पंजाब ना संघे आप साहेबो नी जे अपूर्व भक्ति करी ते बदल लाहोर ना संघ ने धन्यवाद घटे छे आप श्री आचार्य ने माटे सर्वोत्तम लायक छो तेथी आप जेवा लायक ने लायक पदवी मलवा थी अत्रे नो संघे घणोज खुशी थयो छे, संघ समस्त ना तरफ थी तार आज रोजे कर्यो छे एटले अमे जुदो तार कर्यो नथी।

आपना कृपा कांक्षी—

बापुभाइ वैद्य ना सपरिवार नी वंदणा स्वीकारशो जी।

(१४)

श्री

वडोदरा

ता ८-१२-२४

परमपूज्य आचार्यजी महाराजजी साहेब श्री विजयवल्लभ सूरीजी महाराजनी साहेब तथा श्री उपाध्यायजी महाराज साहेब आदि मुनि मंडलनी पवित्र सेवामा श्री वडोदराथीली आपनो सेवक चिमनलाल विगेरेनी वंदना १००८ वार अवधारसोजी आप साहेबना दर्शननो पत्रघणाज दिवसथीनथी तो सेवक परपत्र लखवा आपना कोमल हस्तनेजरा वार वरदीदेशोजी

आप साहेब आचार्य पदवी पाम्याछोतेम उपाध्यायजी महाराज सो वि थयाछे जेथी हमारा दिल मां हर्षरेतोनथी हमनेतो छु पण वडोदरानो श्री संघघणोज खुशी थई गयोछे ।

(१५)

वदि ८ वार शुक्र

स्वस्ति श्री लाहोर मध्ये छत्रीस गुणधारक बाल ब्रह्मचारी महाव्रत धारी जीवदया गुण भंडार श्री श्री श्री आचार्य महाराज श्री वल्लभ सूरीश्वर तथा उपाध्यायजी सोहनविजयजी वीगेरे साधु मंडल सुरत बंदरथी ली, तलकचंद दयाचंद तथा धर्मचंद वीगेरेना १००८ वार वंदना आपना चरण सेवामां कबूल करशो, विशेष लिखवानु कि भावनगरनु चोपानी आत्माराम सभानु वांची घणोज आनंद थयोछे तेमज जैन पेपर वाच्यु तथा प्रजामित्र वाची वाकेफ थयाछीए अती आनंद थया छीए, अमो तुमारो उपगार घडीपण वीशरता नथी, तुमो उपगारी मुनि महाराजनी धर्मलाभनी राह जोतो बेठां छु ।

रतनचंदना वंदना

वांचजोजी.

(१६)

ता १३-१२-२४

आचार्य महाराज श्री श्री श्री वल्लभविजयजी नी सेवामा लाहोर स्वस्ती श्री लाहौर महा शुभस्थाने पूज्याराधे सर्वेशुभ उपमा लायक पंचमहाव्रतधारी आचार्य महाराज श्री श्री श्री वल्लभ-विजयजी तथा आदिठाणा सर्वेनी पवित्र सेवामा श्रेतान श्री मुंबई बंदरथीली, सेवक छोटालाल मोतीचंद ना तथा सह कुटुंब ना १००८ वार वंदना स्वीकारसोजी जत लखवानुजे आपनी आचार्य पदवी साभली अमो तथा सह कुटुंब बहुत खुशी थयो

छाय रीजु आप श्री हमेशा थी सासन नी सेवा बजावता आव्या छो अन हवे थी विशेष बजावशो अेवीपूर्ण आशा छे, सासनदेव आपनी कीर्ति ने तथा जिन्दगी ने आबाद राखो, रीजु आचार्य महाराज श्री श्री श्री आत्मारामजी नी पण अेम मननी इच्छा हती, मुनि महाराज श्री वल्लभविजय जी सामननी रक्षा करसे, ते श्री श्री नी मननी इच्छा श्री सर्वे पूरीपाडी छे, जो क आपने आचार्य पद लेवानी इच्छा नहती, पण सघना आग्रहथी तथा प्रवर्त्तकजी महाराज श्री कांति विजयनी नी तथा हंस विजयजी नी आज्ञा थी सघनो बहुज आग्रह होवा थी लीधेल छे, सासन देवता आपनी रक्षा करो अेम हू प्रभु पासे मागु छु।

(१७)

सुरत–वडा चउटा

ता० ३-१२-२४

मु० लाहोर मध्ये पुज्यपाद आचाय श्री वल्लभविजय जी तथा उपाध्याय श्री सोहन विजयजी आदि ठाणा जोग श्री सुरत थी लि० सेवक शा० फकीरचद खीमचद तथा नानकचद भाई चद नी वदना १००८ वार अवधारशो जी

जतलरणानु के लाहोर वगेरेना तार समाचार कांति विजय जी ना उपर जामनगर मध्ये आवेला त वखते हु मारा पुण्योदय थी अचानक जामनगर गयलो हतो ते वखते आप नी आचार्य पदवी ना समाचार वाची घणोज आनद थयो छे, दरेक तार मारा वाचना मा आव्याहता तेथी विशेप आनद थयो हतो।

ली० सेवक नी वदना स्वीकारशो।

(१८)

ॐ

श्री लाहोर परम पुज्य गुरु महाराज श्री वल्लभ विजय जी

आदि महाराज नी पवित्र सेवा में भावनगर बंदर थी ली० आप
नो चरण उपासक सेवक मास्तर माणक लाल नानजी भाई तथा
चीं० भाइ बाबूराम तथा श्राविकादि नी १००८ वार वंदणा
स्वीकारशोजी आज रोज श्रीजैन आत्मानंद सभा उपर
हतो तेथी जाणयु जे आपने तथा पंन्यास श्री सोहन
श्री आचार्य अने उपाध्याय महाराज नी पदवी
थी अर्पण करवा मा आवी ते जाणी परम आनंद
ते पदवी ने खरेखर लायक हता अने ते छेरंट
आनी तेथी अति हर्ष थयेल छे

द० पोते ४–१

(१६)

मुंबई

परमपुज्य परमोपकारी
श्री १००८ श्री वल्लभविजय जी नी
ली० मुंबई थी श्रावक लल्लु भाई
लाल ना सविनय १००८ वार वंदना
वली आप जेवा परमोपकारी अनेक
र्णीय मुनिराज ने आजना मागर्ल
स्थम रूप श्रीमद जैनाचार्य नी
वानी जे उत्तम तक मेलवी छे, ते
थयो छे, आप श्री जेवा उत्तम
राज ने जैनाचार्यनी पदवी
थयु छे आ समाचार जाणी
परमात्मा प्रत्ये अमारी एटलीज

गुणी अने परमोपकारी मुनि राज दीर्घायुष्य भोगवी जैन शासन नी कीर्तिमा वधारो करे अस्तु ।

द० मगनलाल ना १००८ वार सविनय वदना अवधारशोजी

(२०)

श्री पार्श्वजिन प्रणम्य श्री लाहोर नगरे

शांत दात त्यागी वैरागी शासनोद्धारक आदि अनेक शुभ गुणालकृत पूज्य आचार्य महाराज श्री श्री १००८ श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज आदि समस्त ठाणा नी पवित्र सेवा मा योग्य श्री मुबई बदर थी ली चीमनलाल जी प्रतापजी वगेरे ना १००८ वार वदना अवधारशोजी ।

विशेष आपे मगशर शुद ५ ना रोज आपनी इच्छा न होवा छता अनेक मुनिवर्य अने श्रावक समुदाय आग्रह थी आचार्य पद अगिकार कर्या ना समाचार सांभली अमो अति आनदित थया छीए ।

चीमनलाल नी वदना

मागसर सुदि १० शुक्रवार द० सेवक छगनलाल पानाचद नी १००८ वार वदना अवधारशो जी ।

(२१)

मुंबई ता० ११-१२-२४

स्वस्ति श्री लाहोरे महा शुभ स्थाने पुज्याराधे परम पुज्य शासनोद्धारक जैन धर्म प्रवर्तक एवा अनेक गुणे करी विराजमान श्री मद् आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरि महाराज तथा आदि मुनि महाराज समस्त जोग श्री मुबई थी ली० आपना दर्शनाभिलाषी आपना चरणकमलनी सेवा ना अभिलाषी सेवक

आदि महाराज नी पवित्र सेवा में भावनगर बंदर थी ली० आप नो चरण उपासक सेवक मास्तर माणक लाल नामनी भाई तथा चो० भाइ बाबूराम तथा श्राविकादि नी १००८ वार वंदणा स्वीकारशोजी आज रोज श्रीजैन आत्मानंद सभा उपर अत्रे तार हतो तेथी जाणयु जे आपने तथा पन्यास श्री मोहन विजयजी ने श्री आचार्य अने उपाध्याय महाराज नी पदवीं श्रीजैन संघ तरफ थी अर्पण करवा मा आवी ते जाणी परम आनंद थयेल छे, आप ते पदवी ने खरेखर लायक हता अने ते छेवटे पदवी आपनामा आवी तेथी अति हर्ष थयल छे

द० पोते ४–१२–२४ गुरु

(१६)

मुंबई १—१२—२४

परमपुज्य परमोपकारी सद्गुणालंकृत श्रीमद् मुनि महाराज श्री १००८ श्री वल्लभविजय जी नी पवित्र सेवा मा मु० लाहोर ।

ली० मुंबई थी श्रावक लल्लु भाई गुलाबचंद हरिचंद मगन लाल ना सविनय १००८ वार वंदना स्वीकारशो

वली आप जेवा परमोपकारी अनेक शुभगुणालंकृत प्रातः स्मरणीय मुनिराज ने आजना मांगलीक दीवसे श्रीजैन शासन ना स्थंभ रूप श्रीमद् जैनाचार्य नी पदवी श्री लाहोर ना संघ आप वानी जे उत्तम तक मेलवी छे, ते जाणी अमोने अत्यंत आनंद थयो छे, आप श्री जेवा उत्तम चरित्र ना धारनार गुणी मुनि राज ने जैनाचार्यनी पदवी आपना मां आवी छे ते घणुज योग्य थयु छे आ समाचार जाणी अत्रे सर्व ने घणो आनंद थयो छे, परमात्मा प्रत्ये अमारी एटलीज प्रार्थना छे के आप श्री जेवा

गुणी अने परमोपकारी मुनि राज दीर्घायुष्य भोगवी जैन शासन नी कीर्तिमा वधारो करे अस्तु।

द० मगनलाल ना १००८ वार सविनय वदना अवधारशोजी

(२०)

श्री पार्श्वजिन प्रणम्य श्री लाहोर नगरे

शांत दात त्यागी वैरागी शासनोद्धारक आदि अनेक शुभ गुणालकृत पूज्य आचार्य महाराज श्री श्री १००८ श्री विजय वल्लभ सूरीश्वर जी महाराज आदि समस्त ठाणा नी पवित्र सेवा मा योग्य श्री मुबई बदर थी ली चीमनलाल जी प्रतापजी वगेरे ना १००८ वार वदना अवधारशोजी।

विशेष आपे मगशर शुद ५ ना रोज आपनी इच्छा न होवा छत्ता अनेक मुनिवर्य अने श्रावक समुदाय आग्रह थी आचार्य पद अगिकार कर्या ना समाचार सामली अमो अति आनदित थया छीए।

चीमनलाल नी वदना

मागसर सुदि १० शुक्रवार द० सेवक छगनलाल पानाचद नी १००८ वार वदना अवधारशो जी।

(२१)

मुंबई ता० ११-१२-२४

स्वस्ति श्री लाहोरे महा शुभ स्थाने पुज्याराधे परम पुज्य शासनोद्धारक जैन धर्म प्रवर्तक एवा अनेक गुणे करी विराजमान श्री मद् आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरि महाराज तथा आदि मुनि महाराज समस्त जोग श्री मुबई थी ली० आपना दर्शनाभिलाषी आपना चरणकमलनी सेवा ना अभिलाषी सेवक

खभात वाला (चोकसी) कस्तूरचद मगनलाल तथा आपना सेवक उजमसी नी वदना १००८ वार अवधारशोजी

अने आप साहिबनी आचार्य पद्वी ना समाचार सांभली अत्यानद थयो छे

आपना सेवक कस्तूर नी वदना १००८ अवधारशोजी।

मगशर शुद १५ गुरुवार

(२२)

पुज्य आचार्य सूरी जी वल्लभ विजयजी उपाध्याय सोहन विजय जी आदि ठाणा।

मुंबई थी ली० नाना भाई बेन रुकमणी परिवार सहित १००८ वदना अवधारशोजी।

आपने सघे आचार्य पदवी आपी ते जानी अमारा मने घणा हर्ष पूर्वक आनद थयो छे, आचार्य पदवी थवानी ते अने कोई ने पण खबर न होती श्रीसघ ना तार थी खबर थई छे आनद थयो छे।   २२-१२-२४

(२३)

स्वस्ति श्री लाहोर महा शुभ स्थाने अगणित गुण गणाल कृत गात्र परम पात्र मुनि महाराजाओं ना सिरताज छत्रीस गुणे-करी विराजमान आचार्य महाराज श्रीमान विजयवल्लभ सूरि जी महाराज सपरिवार नी सेवा मां।

मुबई थी ली० आपना आज्ञाकारी सेवक पानाचद प्रेमचद तथा मोहनलाल पानाचद तथा पदमशी पानाचद आदि सकल परिवार नी वदना १००८ वार अवधारशोजी.

आप साहेबनी आचार्य पदवी ना समाचार मने बहुज मोडा मल्या छे, तेथी तार करावी शक्यो नथी आपनी आचार्य पदवी

थी आखा समार ने अपार हर्ष थयो छे, स्वर्गवासी श्री आत्माराम जी महाराजनी हयाती थीज आप भाव थी तो आचार्य छो, द्रव्य थी ससार नी रुढ़ी प्रमाणे हमना आप आचार्य थयाछो ते वहुज खुशी नी वात छे आप चिरकाल सुधी जीवो। शासन नी ध्वजा फरकावो

मिति मागशर वद नोम रविवार

सेवक खीमचद देवजी नी वदना १००८ वार अवधारशो पानाचद प्रेमचद नी वदना १००८ वार स्वीकारशो

(२४)

मुंबई १६-१२-१९२४

श्रीमद् महाराज श्री श्री श्री आचार्यजी वल्लभविजयजी सूरीश्वरजी तथा उपाध्यायजी श्री श्री सोहन विजयजी आदि ठाणा, जात मुंबईथीली, सुश्रावक गुलाबचद सोभागचद तथा अमारा मातानी परसनबाई तथा सरस्वतीबन विगेरेना वदना १००८ स्वीकारशोजी आप साहेब ने लाहोर नो संघ आचार्य पदवी आपी तेजाणी हमो घणाज खुशी थयाछीए आपश्रीने हमोए तार कर्योहतो ते मल्योहशे।

* ली॰ गुलाबचद सोभागचद ना १००८ वदना स्वीकारशो

(२५)

मुंबई मौन एकादशी

वन्दे जिनवर्द्धमानम्

सूरि श्रीवल्लभमानदम् वन्दे मात.स्मरणीय सर्वोत्कृष्ट समयज्ञ, परमपूज्य आचार्य महाराज श्रीमद् विजयवल्लभ सूरीश्वरजी

---

* इस पत्रमें तारका भजना लिखा है परन्तु नहीं मालूम क्या कारण ? तार मिला नहीं है।

नी पवित्र सेवामां निवेदन विशेष श्रीपचाब समस्त श्रीसघे आप पूज्यश्रीने सपूर्णरीतेयोग्य एवी श्रीसूरि पदवी थी अलकृत करेल छे ते योग्यज थयुछे तेने माटेहू मारो श्रीसघे प्रत्ये हार्दिक आनद जाहेर करछु।

ली० आज्ञाकित सेवक

भोगीलालना सविनय वदना

(२६)

सुरचद० न० महेता
१२१ भुलेश्वर राड
मुबई न० २

मीती मागसरवद १ (गुजराती)
शुक्रवार

परमपूज्य पचमहाव्रतनाधारणहार छत्रीस गुणकरी वीरा जमान श्री १००८ श्री आचार्य महाराज श्रीविजयवल्लभ सूरीश्वरजी तथा श्री उपाध्याय महाराज श्रीसोहनविजयजी महाराज तथा पन्यासजी श्रीविद्याविजयजी गणी तथा महातपस्वीजी श्रीगुणविजयजी आदि ठाणा, जोग लाहोर, मुबईथी श्रावक सुरचद महेतानी वदना १००८ वार चरण कमलमा अवधारशो जी, आप सर्वे साहबोसुखसातामाहशोजी, अत्रे श्रीगुरुदेव महाराजनी कृपार्थी कुशल मंगल वरतेछो जी, आप साहेब ने श्री आचार्य पदवी स्थापन थइते जाणी अति आनद थयोछे, आप श्री दीर्घ आयुषी थाओ श्रीजैन शासननी उन्नति करता आव्याछो अने विशेष करो, लायक ने लायक पदवी स्थापन थइ तेथी श्री सघमां घणो आनद फेलाणो छे।

(२७)

मुबई ५-१२-२४

स्वस्ति श्री शहरे लाहोर मध्ये पचमहाव्रत धारी छत्रीस गुणेकारी विराजमान छोकाय रक्षक शीलांगधारी शात

दात गांभिर्यादिक गुणे विराजित, विद्याविशारद, शासन रक्षक परमोपकारी श्री श्री श्री १००८ आचार्य श्रीविजयवल्लभ सूरिश्वरजीनी पवित्र सेवामां मुंबई बंदर थी ली. जवेरी नारा भाई मोतीलाल नी १००८ वार वन्दना स्वीकारशोजी—

विशेष आप साहिब ने आचार्य पद थी विभूषित थयेला जाणी अमने घणो आनंद उत्पन्न थयो छे आपना जेवाने रागी अने ममत्व रहित साधु महात्मा ने कोई पण पदवी अभिलाषा होती नथी, छतांपण आपनी विद्या तथा गुणो जेनो विस्तार घणाय लांबा वखत थी थयले छ, तेमन आ महान पद माटेनी आपनी योग्यता पण लांबा वखत थी थयली छे तेनो आज व्यवहारी हु आज मांव देखी अमने अति आनंद थयो छे आप जैन शासनना एक योगी महात्मा छो अने खास करी आपना महान गुरुदेव ने पगले चाली पंजाब जेवी भूमी मां धर्मनी विजय पताका फरकवा आपने श्लाघ्य प्रयत्न करो छो, ते त्यां ना सर्व जीवो ऊपर उपगार अने शासननी अभिवृद्धि नु कारण छे, आपनु दृष्टांत बीजा साधुओ ने अनुकरणीय छे।

अमो आशा राखीये छीये के आप जे प्रमाणे शासन ना महान कार्यो करता आव्या छो तेवाज महान कार्यो दीर्घायुषी थई करता रहेशो एवी नम्र इच्छा छे।

सेवक नाराभाई नी वंदना स्वीकारशोजी

(५८)

श्री लाहौर नगरे

तत्र शांत दांत त्यागी वैरागी शासनोद्धारक आदि अनेक शुभ गुणालंकृत परम पुज्य आचार्य महाराजनी पवित्र सेवा मां

योग्य मुबई बदर थी ली० नीचे सही करनाराओ नी १००८ वार वदना अवधारशोजी

नि० अमोए गये परमरोज आप साहिबे परम पवित्र आचार्य पद ग्रहण करनाना समाचार सांभली अमो मां अत्यत खुशी थयाछीए आपने आचार्य पद अर्पण करवानो परम पुज्य शासन प्रभावक स्वगस्थ आचार्य श्री विजयानद सूरि जी नो खास विचार हतो, परन्तु तेओ साहिबना स्वर्ग गमन बाद आप दरेक रीते आचार्य पद माटे लायकात धरावता छता आपने पद ग्रहण न करता श्री मद् विजयकमल सूरीश्वरजी ने वडिल समजी तेमने ते पद ग्रहण कराव्यु हतु, त्यारबाद पण अनेक अग्रगण्य व्यक्तिओ तरफ थी अनेक वार आपने आचार्य पद ग्रहण करवा माटे अत्यत आग्रह हतो छतां आपते माटे तद्दन नि स्पृह हता तेमज हालमां पण अमारा सामलवा अने जाणवा मुजब आप पद ग्रहण करवानिस्पृह हता, परन्तु अनेक मुनि वर्य तथा श्रावक समुदाय ना खास आग्रह अने अत्यत प्रेरणाथी आपे आपनी इच्छा नहोवाछतां ग्रहण कार्यु ते अत्यत योग्यज कर्युछे, जेथी अमो सँघसाज आनदित थयाछीए, आप तीर्थोद्धार ना तथा शासनोद्धार ना अनेक कार्यो करो, अने शासन देवता तेमा आपने सहाय थाओ, एम अमे सौ इच्छीएछीए।

मागशर शुद ८ ने बुध वार

छगनलाल पानाचद मास्तरना १००८ वार वदना अवधारशोजी

रतनचद जीवराज नवलाजीनी वदना अवधारशोजी।

सहसमल्ल हसाजीनी वदना अवधारशो

(२६)

मुंबई १७-१२-२४

द० सेवक मणिलाल निकमनी वदना १००८ वार अव धारशोजी, घणो वर्षोथी, आचार्य पदवीनी माखी करतो हतो परमा तेज पदवी में जोई नहीं-नेहु हाजिर नहि तेने माटे तो घणीज दिलगीरी थईहतो, पण आचार्य पदनी आप्यानां समा चार थी घणोज आनद थयोछे।

(३०)

घाणेराव—ता० २१-१२-१९२४

सर्व सद्गुणालकृत परमपूज्य-पवित्र-परममाननीय, प्रात स्मरणीय, जैनशासनोन्नत्ति कारक श्रीमान् विजयवल्लभ सूरि महाराज साहेबनी पवित्र सेवामा वि' वि लखवानु के आपनी कुशलता चाहुछु बीजु लखवानु के "जैनपत्र" नी अदर मांगलिक समाचार वाचीने हु घणो खुशी थयोछु, म्हारीवत्ती श्रीमान् उपाध्यायजी महाराज आदि समस्त मुनि महाराज ने १००८ वार वदणा जणावशोजी, एज म्हारालायक कार्य सेवा फरमावशोजी।

द० सेवक गीरधर देवचदनी वदना मान्यकरशोजी।

(३१)

जंबुसर ता० २५-१२-१९२४

जैनाचार्य श्री १००८ श्रीमद् विजयवल्लभ सूरिनी पवित्र सेवामा मु लाहोर, श्रीजैन धर्मोध्धारक परमपूज्य आचार्य महाराज श्रीमद् विजयानद सूरीश्वर जीना सद्गत बाद अनेक परिषहो सहनकरी पजाब जेवा विकट प्रदेशमा विचरी जैनधर्मनी

ज्योत प्रकाशीत करवा आपे करेलो अथाग श्रम माटे अमेनो आभारमानेछे आपनो उपरोक्त परिश्रम तथा विशुध्ध चारित्र तथा सपूर्ण लायकतानो विचारकरी पजाबनो समस्त सघे आप श्रीने जैनाचार्यनी पदवीथी विभूपित करवानु शुभ पगलु भर्युछे ते तदन प्रशसनीयछे अने अमेनो सघ तेने अत.करणना आवाजथी वधावीलेछे, परन्तु एथी विशेष आपने आचार्य पदवी थी विभूपित करवानु कहेता आप अपना वडीलो तरफ जेमने तेवोज पूज्यभाव राखवानी बतावेली इच्छाए आपना तदन सरल परिणामी अने निरभिमानी पणानो आबेहुब चितार रतावेछो, आपनी ए शुभ भावना माटे अमेनो सघ आपनो अत'करण पूर्वक आभार मानेछे।

ली० श्री जयुसर जैन सघ तरफथी सेवक

जगमोहन मगनदास शाह नी वदणा स्वीकारशोजी

(३२)

काशी विश्वविद्यालय

होस्टल न० ४ । ४१ ता० ४–१–२५

पूज्यपाद आचार्य श्रीने सेवामा (लाहोर) सादर वदना आप आचार्य पदवी पर बिराज्या सामली आजे मने जेटलो आनद थयोछे तेहु पोतेज जाणु छु तेनु वर्णन समय आव्ये करीश।

लि० आपना बालको

शांतिलाल मगनलाल अमृतलाल

(३३)

श्रीसद्गुरुभ्यो नमः

शान्त दान्त पचमहाव्रतादि अनेक उच्च गुणोए अलकृत . ..... श्री १००८ आचार्य श्रीमद् विजयवल्लभ

सूरिजी महाराज तथा उपाध्याय पदालंकृत मुनिराज श्रीमोहन विजयजी महाराज आदि महात्माओनी पवित्र सेवामां—

शुभ स्थान लाहोर—

सुरवाडा थीलि० दर्शनाभिलाषी लालचद, मनसुख, छग नलाल, दलसुखभाई, झवेर, नेमचद, चीमन, मोना वहन पार्वती वहन विगेरे सर्व श्रावक श्राविकानी नम्रता पूर्वक वदना अवधारशोजी ।

अत्रे आप सद्गुरुनी पूर्ण कृपाथी सुखसाता अनुभवाय छे आप परमोपकारी गुरुरायने सदा सुख साताना चाहिये छीये दया लावी आ पापी गरीब सेवकोने पत्रद्वारा दर्शनदेशो कृपा करशोजी

विशेषमा योग्य समयानुसार आप श्रीने समस्त श्रीसघे तरफ थी महान् पवित्र उत्कृष्ट आचार्य पदथी अलकृत करल 'जैन' पत्रथी जाणी अत्रे सर्वने अतिशय आनद थयेल छे ते पवित्र पदयुक्त आप श्रीने शासनाउन्नतिना सपूर्ण कार्योमां शासन देवो सहायभूत थई चिरकाल आपश्रीनो उज्वल यश जगतमा अ स्खलितपणे विस्तार पामो एज अतरनी प्रबल भावना अने अभिलाषा छे ।

अमो दीन गरीब सेवको योग्य काम सेवा फरमावशोनी पत्र पहुचे थी जरूर प्रत्युत्तर आपी सेवको ने आनदित करशो जी एज नम्र विनती स० १९८१ ना पोस सुदि २ शनिवार द दर्शनातुर चरण किंकर झवेर नी सविनय वदना १००८ वार अवधारशोजी ।

नोट—कितने ही धर्मात्मा गुरुभक्तों के अन्यान्य पत्र भी आये

थे, परन्तु अफसोस के वो पत्र वे ख्याली में रद्दी में डालदिये गये उमीद है जो भाई साहिब मुयाफ फरमावेंगे।

श्री आत्मानंद जैन सभा,
लाहौर (पंजाब)

रथ यात्रा के समय जो बोलियां हुई उनका वेरवा

मूर्ति श्री शान्तिनाथ भगवान	ला० पज्जुमल धरमचंद नारोवाल	८० मन	४०)
रथ हाकने वाला	ला० उत्तमचंद बुड्डामल ,,	१०५ मन	५२५)
चमर दायीं ओर	,, गंगाराम बनारसीदास अम्बाला	२० मन	१००)
,, बायीं ओर	,, रामरतन रोशन	१५ मन	७५)
छाता दायां	,, मानकचंद छांगलाल गुजरांवाला	२५ मन	१२५)
छाता बायां	,, रामचंद लुध्याना	११ मन	५५)
मूर्ति श्रीमहावीर भगवान	,, पज्जुमल धरमचंद नारोवाल	५१ मन	२५५)
रथ हाकने वाला	सेठ मोतीलाल मूलजी मुम्बई	१०१ मन	५०५)
चमर दाया	ला० जगीरीमल नारोवाल	१० मन	५०)
चमर बायां	ला० सावनमल रामचंद कपूरथला	१ मन	५०)
छाता दायां	,, किशनचंद मालिक फर्म ला० खुशीराम हुक्मचंद लुध्याना	१ मन	५०)
,, बाया	ला० सावनमल रामचंद कपूरथला	७ मन	३५)
मूर्ति श्रीचन्द्राप्रभु भगवान	ला० पज्जुमल धरमचंद नारोवाल	४० मन	२०)
मोटर हाकने वाला	ला० हीरालाल मानकचंद लाहौर	३ मन	१५०)
चमर दायां	ला० किशनचंद हीरालाल टोबाटेकसिंह	१० मन	५०)
चमर बायां	ला० नन्दलाल पट्टी	११ मन	५५)
छाता दाया	ला० प्रभदयाल मुन्शीलाल लाहौर	५ मन	२५)
छाता बायां	ला० प्यारालाल कसूर	६ मन	३०)

मूर्ति श्रीविजयानन्दसूरी जी महाराज	ला० ईश्वरदास अमरनाथ दुग्गड़ नारोवाल	४० मन	२००)
वासा दाया	ला० परसुमल्ल नहलम	६ मन	३०)
,, बायां	ला० भगतराम कसूर	६ मन	३०)
फोटू श्रीविजयानन्द जी महाराज	ला० प्रभदयाल ,	२५ मन	१२५)
चामर दाया	ला० गणपतमल सिविल नाजर लाहौर	५ मन	२५)
चामर बायां	ला० प्रभदयाल मुनशीराम लाहौर	५ मन	२५)
खज़ानची	ला० ,, , ,,	२५ मन	१२५)

कुल जोड ६५९ मन ३२९५)

मगसर प्रविष्टे १७ श्रीमुनिमहाराज श्रीवल्लभविजय जी महाराज को आचार्य पदवी से विभूषित करके उसी समय मंडप में नीचे लिखी बोलियां हुईं

मूलनायक श्रीशान्तिनाथ

भगवान को गद्दी पर विराजमान करना	ला० परसुमल खजानचीलाल लाहौर	१५० मन	७५०)
श्रीमल्लीनाथ भगवान	ला० मानकचन्द छोगमल गुजरांवाला	८१ मन	४०५)
श्रीपार्श्वनाथ भगवान	सेठ मोतीचन्दजी खुशालजी मुम्बई	१०१ मन	५०५)
श्रीमुनिसुव्रतनाथ भगवान	ला० भगतशाह लाभचन्द गुजरांवाला	१०५ मन	५२५)
श्रीऋषभनाथ भगवान	सेठ सुमेरमल्ल जी सुराना बीकानेर	१०१ मन	५०५)
,, ,, ,,	ला० चननदास मक्खनलाल गुजरांवाला	६५ मन	३२५)
ध्वजा	ला० जगन्नाथ दीवानचन्द गुजरांवाला	१०५ मन	५२५)
कलश	ला० नरसिंहदास बूटामल्ल ,,	७५ मन	३७५)
मूर्ति श्रीविजयानन्दसूरि	ला० रामचन्द पूर्णचन्द अमृतसर	५० मन	२५०)
चरण श्री ,,	ला० शिवदयाल बागामल लोनका डागरां	३१ मन	१५५)
,, , जिनकुशलसूरि	ला० प्रभदयाल मुनशीलाल लाहौर	२१ मन	१०५)
,, , जिनचन्द्र सूरि	प्रभाबाई साण्डीरा	१२ मन	६०)
, ,, जिनकुशलसूरि	ला० प्रभदयाल मुंशीलाल लाहौर	११ मन	५५)
सिद्धचक्र यन्त्र	ला० हीरालाल मानकचन्द लाहौर	११ मन	५५)

निर्शाणी देवी	ला० मोतीलाल बनारसीदास दुग्गड़ लाहौर	११ मन ५५)
प्रथम दर्शन श्री शान्तिनाथ भगवान	ला० चुनीलाल शादीदास अमृतसर	१०१ मन ५०५)
प्रथम दर्शन श्री सुविधिनाथ भगवान	ला० मोतीलाल बनारसीदास दुग्गड़ लाहौर	६१ मन २०५)
प्रक्षाल	सेठ कालीदास शिवचंद अमदाबाद	३५ मन १७५)
केशरपूजा	ला० रोशनलाल बीकानेर वाले अमृतसर	७१ मन ३५५)
पुष्पपूजा	ला० चेतराम गोकलशाह गुजरांवाला	५५ मन २७५)
मुकुट पहनाना	ला० प्रभदयाल मुंशीलाल लाहौर	७० मन ३५०)
आरती उतारना	सेठ पूनाभाई अमदाबाद	६१ मन ३०५)
मंगल दीवा	सेठ नवीनचंद हेमचंद मुम्बई	३० मन १५०)
श्रीसुविधिनाथभगवान की सब पूजा	ला० ठाकरदास पन्नालाल गुजरांवाला	१६ मन ८०)
साथिया	ला० हीरालाल मानकचंद लाहौर	२५ मन १२५)
आरती उतारना	ला० इन्द्रमल अम्बाला	१५ मन ७५)
मंगल दीवा	ला० परमानंद विलासराय लाहौर	८ मन ४०)
शान्ति	ला० प्रभदयाल मुंशीलाल लाहौर	११ मन ५५)

कुल जोड़ १४६९ मन ७३४५)

न्योंदरा.

१०१) श्रीसंघ जीरा
१०१) „ स्थानक वासी परस्पराय लाहौर
१०१) „ दिगम्बरी लाहौर
५१) „ स्थानक वासी स्यालकोट
५१) „ पट्टी
१०१) „ जण्डियाला
३१) „ रोपड़
२५) „ मलेरकोटला
३१) „ नारोवाल
११) „ किला दीदारसिंह

२१) श्रीसघ लुध्याना
३१) „ जेहलम
११) „ वेरोवाल
२१) „ साढौरा
३१) „ पिंड दादनखा
३१) „ खान्काडोगरान्
२१) „ पपनाखा
११) „ स्यालकोट
५१) „ कसूर
८५) „ लुध्याना
१०१) „ अम्बाला
५१) „ समाना
५१) „ डेरागाजीखा
२१) „ सरसरा
३१) „ जालन्धर
२१) „ लतवर
५१) „ मुलतान
२१) „ जम्मु
१०१) „ गुजरावाला
१०१) „ अमृतसर
५१) सेठ शिवचद सुमेरमल सुराणा बीकानेर
५१) „ मोतीलाल मूल्जी मुम्बई
५१) „ गोविन्दजी खुशालजी मुम्बई
५१) „ नवीनचद हेमचद मुम्बई
५१) श्रीसघ अमदावाद
५) ला० मोतीलाल देहली
११) ला० टीकमचद जौहरी दिल्ली वाले
११) सेठ वेजुमल मानकचद जौहरी दिल्ली

५) ला० कन्हैयामल दिल्ली
१०) अमीरचंद नकोदरवाला
१०) ला० वसतामल महरचंद हुश्यारपुर
११) ला० तीरथराम अमरनाथ खण्डेलवाल हुश्यारपु
१०) ला० गोरामल अमरनाथ हुश्यारपुर
११) ला० रामचंद सरदालाल म्यानी
५) ला० मुकंदीलाल हुश्यारपुर
५) ला० नन्दलाल मेलूमल्ल शाहकोट
१०) ला० सिरांचद चन्द्रसेन बिनोली
२) ला० रामप्रसाद
१०) माता बनारसीदास जगराओं
५) ला० धनतामल रामचंद उड़मड़
५) ला० हमीरचंद करतारपुर

१८०६) कुल जोड़

"१०१) रु० श्रीसंघ मदरास की तर्फ से मद्रास के नये मंदिरजी के भंडार में से लाहौर श्री शान्तिनाथ स्वामि के मंदिर जी को भेंट"।

प्रो॰ वनारसीदास जैन एम॰ ए॰
लंडन का पत्र

स्वस्ति श्री गुजरांवाला नगरे विराजमान श्री १००८ श्री मद्विजयवल्लभ सूरि जी जोग लन्दन से सेवक वनारसीदास का सविनय वन्दना नमस्कार वाचना। यह समाचार सुन कर मुझे निहायत खुशी हुई है कि आप ने पंजाब के जैनियों का उद्धार करने का भार अपने जिम्मे ले लिया है अर्थात् स्वर्गवासी गुरु महाराज के लगाए हुए पौधे की आप सब प्रकार रक्षा करेंगे और इस का चिन्ह रूप आचार्य पद आप ने धारण कर लिया है। काम तो बड़ा कठिन है परन्तु आप ने गुरु महाराज के अन्तेवास में सब अवस्थाएं देखी हैं और आप यहां के लोगों से भली प्रकार परिचित हैं। परमात्मा आप को इस काम में सिद्धि देवें। स्वामी जी महाराज तथा अन्य मुनिराजों के चरण कमलों में वन्दना नमस्कार।

BANARSI DAS, JAIN,
112 GOWER STREET
LONDON, W. C.

माघ वदि ४ सं० १९८१